मासिक

कामधेनु कल्याण

पत्रिका

जनवरी-2017

वर्ष 11

web:www.pathmedagodham.org Email:k.k.p.pathmeda
Facebook:shreepathmedagodham, Twitter:pathmedagodham5

अंक 8

।।श्री सुरभ्यै नमः।।

हे इस धर्म धरा और पवित्र भारतभूमि के वासियों !

आज मैं आप सभी से मेरे गोवंश के साथ इस देश की पवित्र भूमि पर किये जा रहे अपराधों का कारण पूछती हूँ। पुत्रों! गोमाता कभी किसी के साथ अपने मन में कोई भेद नहीं लायी और समस्त धर्मों को माननेवाले और न माननेवाले सबकी स्वयं को माँ मानती है, फिर बिन अपराध उसे आज कसाई क्यों काट रहा है? बिन भेद वह सबको दूध पिलाती और गोमाता कहलाती, जीवनभर प्रेम वह देती पर अपनी जान गंवाती। यदि गोवंश के प्रति आपके मन में क्रूर कपटता नहीं है तो गोवंश के पक्ष में सब मिलकर आवाज क्यों नहीं उठाते? आज तुम सब मुर्दों और हिंजड़ों की भांति चुप क्यों हो? बोलो गाय के प्यारों! वो महाराणा प्रताप, शिवाजी और मंगल पांडे की शूरवीरता क्या केवल पुस्तकों में तुम्हारे पढ़ने और सुनने मात्र के लिये ही है? नहीं तो तुम जैसे करोड़ों शूरवीर पुत्रों के होते हुए तुम्हारी माँ को दुष्ट कैसे सता रहे हैं?

पुत्रों! तुम्हारे जीते जी तुम्हारी गोमाता को काले कसाई ट्रकों में बोरियों की भांति भरकर ले जाते हैं, उल्टा लटकाकर तन पर उबला पानी डालते हैं, फिर चाबुक से पीट-पीटकर तड़फाते हैं और जिन्दे जी उसका चमड़ा उतारकर उसके कोमल जूते बनाकर तुमको पहनाते हैं और तुम उसे पहनकर अहंकार में साहब बनकर अकड़-अकड़कर चलते हो। क्या उस समय तुमको गोमाता के हाय-हाय चिल्लाने की करूण आवाज सुनाई नहीं देती? ले हाथ में कटारी, कसाई जब गोमाता के टुकड़े-टुकड़े करता है, मारे दर्द के जब गोमाता तड़पती और सहायता के लिये चीख-पुकार करती है तब उसे ऐसी दशा में देखकर भी आपकी नसों में वो हिन्दुस्तानी खून क्यों नहीं खौल उठता है? कहाँ गया वो देश की आजादी के समय वाला गर्म जोश? आप तो आजाद हो गये और गोमाता को पहले से भी अधिक गुलाम कर दिया?

हे मेरे पुत्रों! इस देश की पवित्र माटी पर आखिर यह पाप कब तक चलेगा? आखिर इस अपराध को सहन करने की तुम्हारी क्या मजबूरी है? अब तो कुछ लोग देश में यह प्रश्न भी उठाने लगे हैं कि वे क्या खाये-पिये इसे दूसरे तय नहीं कर सकते, यह उनकी आजादी है। फिर तो इस आजाद देश में कोई किसी की माँ को मारकर खायेंगे और बेटों को खाने वाले की आजादी के कारण चुप रहना पड़ेगा? क्या देशवासियों! आपको यही सब करने के लिये आजादी दिलाई थी पूर्वजों ने? गोवंश इस देश की अमूल्य धरोहर है और किसी को भी इसे नष्ट करने की आजादी नहीं दी जानी चाहिये। पुत्रों! इस देश में गो की आजादी के लिये एक बार पुनः खड़े हो जाओ! विजयी होने का मंगलमय शुभ आशीर्वाद देती हूँ!

तुम्हारी माँ सुरभि

।। वन्दे धेनुमातरम् ।।

यया सर्वमिदं व्याप्तं जगत् स्थावरजंगमम्। तां धेनुं शिरसा वन्दे भूतभव्यस्य मातरम्।।

वर्ष:11

dke/ku&dY;k.k

अंक:08

पौष मास शुक्लपक्ष वि.सं. 2073 रा.शाः 1938 जनवरी– 2017

१. **सुरभि उवाच** - श्री सुरभि गोमाता २
२. **संयोगजन्य सुख** - साधक संजीवनी ४
३. **श्रीकामधेनु कृपा प्रसाद** - प. श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज ५
४. **गो भक्तमाल कथा २०१३** - प.पू. द्वाराचार्य श्रीराजेन्द्रदासजी महाराज १०
५. **दुग्धं गोमामृतं महत्** - पं. रामस्वरूपदासजी पांडेय १५
६. **हरि ॐ तत् सत् जय गुरु दत्त** - पं. रामस्वरूपदासजी पांडेय १८
७. **मैं हूँ भीमा भारत का (एक नंदी की आत्मकथा)** - एक गोसेवक २२
८. **चलो घर लौट चलें (एक गौपरक उपन्यास)** -पं. रामस्वरूपदासजी पांडेय २५
९. **संस्था समाचार - दिसम्बर माह में हुई भारत गोदर्शन यात्रा का संक्षिप्त विवरण** २७
भारतीय गोसेवा संकल्प समिति की राष्ट्रीय कार्यकारिणी का
अधिवेशन संपन्न, महाराजजी के सानिध्य में श्री पथमेड़ा गोधाम में
श्रीदतात्रेय जयन्ती के भव्य आयोजन एवं मंदिरों के वार्षिक पाटोत्सव

गाय बिना गति नहीं,

वेद बिना मति नहीं

संस्थापक एवं प्रधान संरक्षक : गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानन्दजी महाराज

Web. www.pathmedagodham.org

Email : k.k.p.pathmeda@gmail.com

सम्पादकीय पता

श्रीगोधाम महातीर्थ आनन्दवन–पथमेड़ा,
त.–सांचोर, जि.–जालोर (राज.) 343041

Ph.02979-287102

k.k.p.pathmeda@gmail.com

सम्पादक

पूनम राजपुरोहित "मानवताधर्मी"

Mob.9414154706

eY;&10 #i;

आजीवन सदस्यता शुल्क–1100 रुपये मात्र

संयोगजन्य सुख

मार्मिक बात

(साधक संजीवनी)

कामैस्तैस्तैर्हतज्ञानाः प्रपद्यन्तेऽन्यदेवताः। तं तं नियममास्थय प्रकृत्या नियताः स्वया।।२०।।

व्याख्या- **'कामैस्तैस्तैर्हतज्ञानाः'** - उन-उन अर्थात् इस लोक के और परलोक के भोगों की कामनाओं से जिनका ज्ञान ढक गया है, आच्छादित हो गया हैं। तात्पर्य है कि परमात्मा की प्राप्तिके लिये जो विवेकयुक्त मनुष्य शरीर मिला है, उस शरीर में आकर परमात्मा की प्राप्ति न करके वे अपनी कामनाओं की पूर्ति करने में ही लगे रहते हैं।

संयोगजन्य सुखकी इच्छा को कामना कहते हैं। कामना दो तरह की होती है- यहाँ के भोग भोगने के लिये धन-संग्रह की कामना और स्वर्गादि परलोक के भोग भोगने के लिये पुण्य-संग्रहकी कामना।

धन-संग्रह की कामना दो तरह की होती है-पहली, यहाँ चाहे जैसे भोग भोगें; चाहे जब, चाहे जहाँ और जितना धन खर्च करें, सुख-आराम से दिन बीतें आदि के लिये अर्थात् संयोगजन्य सुख के लिये धन-संग्रह की कामना होती है और दूसरी, मैं धनी हो जाऊँ, धन से मैं बड़ा बन जाऊँ आदि के लिये अर्थात् अभिमानजन्य सुख के लिये धन-संग्रह की कामना होती है। ऐसे ही पुण्य-संग्रह की कामना भी दो तरह की होती है- पहली, यहाँ मैं पुण्यात्मा कहलाऊँ और दूसरी, परलोक में मेरे को भोग मिलें। इन सभी कामनाओं से सत्-असत्, नित्य-अनित्य, सार-असार, बन्ध-मोक्ष आदिका विवेक आच्छादित हो जाता है। विवेक आच्छादित होने से वे यह समझ ही नहीं पाते कि जिन पदार्थोंकी हम कामना कर रहे हैं, वे पदार्थ हमारे साथ कब तक रहेंगे और हम उन पदार्थोंके साथ कब तक रहेंगे?

'प्रकृत्या नियताः स्वया' - कामनाओं के कारण विवेक ढका जाने से वे अपनी प्रकृतिसे नियन्त्रित रहते हैं अर्थात् अपने स्वभावके परवश रहते हैं। यहाँ 'प्रकृति' शब्द व्यक्तिगत स्वभावका वाचक है, समष्टि प्रकृतिका वाचक नहीं। यह व्यक्तिगत स्वभाव सबमें मुख्य होता है- **'स्वभावो मूर्ध्नि वर्तते।'** अतः व्यक्तिगत स्वभावको कोई छोड़ नहीं सकता -**'या यस्य प्रकृतिः स्वभावजनिता केनापि न त्यज्यते।'** परन्तु इस स्वभावमें जो दोष हैं, उनको तो मनुष्य छोड़ ही सकता है, अगर उन दोषोंको मनुष्य छोड़ नहीं सकता, तो फिर मनुष्यजन्मकी महिमा ही क्या हुई? मनुष्य अपने स्वभावको निर्दोष, शुद्ध बनाने में सर्वथा स्वतन्त्र है। परन्तु जबतक मनुष्यके भीतर कामनापूर्तिका उद्देश्य रहता है, तबतक वह अपने स्वभावको सुधार नहीं सकता और तभीतक स्वभावकी प्रबलता और अपनेमें निर्बलता दीखती है।परन्तु जिसका उद्देश्य कामना मिटानेका हो जाता है, वह अपनी प्रकृति-(स्वभाव-) का सुधार कर सकता हैं अर्थात् उसमें प्रकृतिकी परवशता नहीं रहती।

'त तं नियममास्थाय' - कामनाओंके कारण अपनी प्रकृतिके परवश होने पर मनुष्य कामनापूर्ति के अनेक उपायोंको और विधियों (नियमों-) को ढूँढ़ता रहता है। अमुक यज्ञ करने से कामना पूरी होगी कि अमुक तप करनेसे? अमुक दान देनेसे कामना पूरी होगी कि अमुक मन्त्रका जप करनेसे? आदि-आदि उपाय खोजता रहता है। उन उपायोंकी विधियाँ अर्थात् नियम अलग-अलग होते हैं। जैसे-अमुक कामनापूर्तिके लिये अमुक विधिसे यज्ञ आदि करना चाहिये और अमुक स्थानपर करना चाहिये आदि-आदि। इस तरह मनुष्य अपनी कामनापूर्तिके लिये अनेक उपायों और नियमोंको धारण करता हैं।

'प्रपद्यन्तेऽन्यदेवताः' - कामनापूर्तिके लिये अनेक उपायों और नियमोंको धारण करके मनुष्य अन्य देवताओंकी शरण लेते हैं, भगवान्‌की शरण नहीं लेते। यहाँ **'अन्यदेवताः'** कहनेका तात्पर्य है कि वे देवताओंको भगवत्स्वरूप नहीं मानते हैं, प्रत्युत उनकी अलग सत्ता मानते हैं, इसीसे उनको अन्तवाला (नाशवान्) फल मिलता है- **'अन्तवत्तु फलं तेषाम्'** (गीता 7।23) अगर वे देवताओंकी अलग सत्ता न मानकर उनको भगवत्स्वरूप ही मानें तो फिर उनको अन्तवाला फल नहीं मिलेगा, प्रत्युत अविनाशी फल मिलेगा।

यहाँ देवताओंकी शरण लेनेमें दो कारण मुख्य हुए- एक कामना और एक अपने स्वभावकी परवशता।

श्री कामधेनु कृपा प्रसाद

(गोऋषि परम श्रद्धेय स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज)

(13.12.2016, सदगुरु श्री दत्तात्रेय जयंती समारोह श्री पथमेड़ा गोधाम)

सर्वेश्वर सचिदानन्दघन परमात्मा भगवान् सद्गुरु दत्तात्रेय अन्तर्यामी रूप से सभी के ह्रदय में विराजमान हैं। उनका पावन स्मरण करते हैं। पूज्या गोमाता और गौओं के तीर्थ श्री पथमेड़ा गोधाम की वन्दना करते हैं। दतात्रेय जयंती के इस ज्ञानमय उत्सव पर यहाँ पर भगवान दत्त के इस गोसेवा अनुष्ठान के परिसर में विराजमान पूज्य संतगण, विप्र विद्वान, गोभक्त, सज्जन बन्धुओं, माताओं व बहनों सभी को सादर हरि स्मरण जय गोमाता जय गोपाल। संतो को पुनः प्रणाम, ब्राह्मणों को प्रणाम और गोभक्तों का सादर वंदन। आज दत्त जयंती उत्सव है। सनातन वाग्मय के अनुसार भगवान दतात्रेय महाविष्णु के छठे अवतार माने जाते हैं। अलग अलग समय पर भगवान के अवतार विशेष-विशेष कार्य के निमित्त होते आये हैं। वाराह, वामन, नरसिंह राम, कृष्ण आदि अवतारों के जो मुख्य हेतु होते हैं, वे सम्पन्न होने के बाद उनकी लीलाएँ जो प्रगट होती हैं वे पुनः अप्रगट हो जाती हैं। जिस अवतार का जो काम होता है वह पूरा होने के बाद उस अवतार का यह वपु पुनः उनके नित्यधाम में पधार जाता है।

भगवान दत्तात्रेय का अवतार सभी जीवों को भगवान् की अनुभूति कराने के लिए, भगवत् प्राप्ति के लिए हुआ है। जब तक पृथ्वी पर एक भी मनुष्य, इस कलियुग में मुक्त हुए बिना एक भी आत्मा रह गयी तो उनका काम बाकी रहेगा। इसलिए इस पूरे कल्प में भगवान दत्तात्रेय का अवतार अपने जीवों को आत्मबोध देने के लिये आशीर्वाद का कार्य निरन्तर करते रहेंगे। इस पूरे कल्प के वो एक ही सद्गुरु हैं। वे भगवान भी हैं और गुरु भी हैं। भगवान इसलिए हैं कि वे अवतार हैं विष्णु के और साथ में ब्रह्मा और शिवजी। ब्रह्म सृजनशक्ति, विष्णु पालनशक्ति और शिव दोषों की संहारशक्ति। तीनों शक्तियों का संयुक्त स्वरूप भगवान श्री दत्तात्रेय हैं तो भगवान के रूप में उनकी उपासना होती है। दूसरा वे जीव को जगाने के लिए अवतरित हुए थे इसलिए वे गुरु हैं। कोई भी जीव अपने अंतिम लक्ष्य के क्षणों में परमात्मा की प्राप्ति चाहेगा, आज्ञाचक्र से आगे जाना चाहेगा तो उनको सद्गुरु परमात्मा भगवान दत्तात्रेय की शरण लेनी होगी। उनकी आज्ञा से ही आगे जाया जा सकता है।

शास्त्रों में ऐसे अनेक प्रमाण हैं कि कही आचार्य भगवद् अवतार, भगवद् दशावतार यहाँ तक कि भगवान के पूर्णावतारों में भी उस वेद परम्परा को सजीव बनाए रखने के लिए, मर्यादाओं का पालन करने के लिए भगवान् दत्तात्रेय से ज्ञानोपदेश प्राप्त किया। आदि जगद्गुरु शंकराचार्यजी ने काशी में भगवान् दत्तात्रेय से ज्ञान प्राप्त किया। नाथ परम्पराओं के आद्य संस्थापक शिव स्वरूप गुरु गोरखनाथजी ने गिरनार पर्वत पर भगवान् दत्तात्रेयजी से ज्ञान प्राप्त किया। इसके पहले राजा यदु, शस्त्रार्जुन आदि अनेक राजाओं ने भी आत्मज्ञान की प्राप्ति भगवान् दत्तात्रेयजी से की। भगवान दत्तात्रेय अवधूत रुप में रहते हैं। उनका कोई एक निश्चित स्वरूप नहीं है। यद्यपि तीनों स्वरूपों ब्रह्मा, विष्णु और महेश को साथ लिए हुए हम भगवान् दत्त की उपासना करते हैं, पर वे कोई भी रूप बना सकते हैं। वे कई अलंकारों से सुसज्जित रहते हैं। कई बार नंगे रहते हैं। कई बार मेले-कुचेले वस्त्रों में रहते हैं। कई बार जंगल में अकेले ही अलमस्त रहते हैं और कई बार नाना प्रकार के उपदेशादि की चेष्टाएँ भी करते हैं। उनका जो दिव्य स्वरूप है वह दृष्टि से अगोचर है

उसे हम चर्म चक्षुओं से नहीं देख सकते हैं। पर भगवान दत्तात्रेय का अनुग्रह हो तो इन चर्म चक्षुओं में दिव्य चक्षु उत्पन्न हो जाते हैं और उससे उनके दर्शन होते हैं। वे स्मरण मात्र से संतुष्ट हो जाते हैं। और जहाँ भक्त याद करते हैं वहाँ उपस्थित हो जाते हैं। याद करते ही उपस्थित और स्मरण मात्र से संतुष्ट ऐसा भगवान का यह दिव्य स्वरूप गुरु के रूप में भगवान दत्त का यह स्वरूप है। जो-जो जीव इनकी शरण लेते हैं, शरण का आश्रय लेते हैं, जाने-अनजाने से सर्वथा संसार से मुक्त होकर ईश्वर आश्रय की खोज करते हैं, ऐसे विशिष्ट जीवात्माओं को भगवान् दत्तात्रेय स्वयं अपरोक्ष रूप से, सूक्ष्म रूप से अपना मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। उनको कहाँ जाना है, कहाँ जाने से उनको अपने गन्तव्य की प्राप्ति हो, वही उनके पथ प्रदर्शक का कार्य करते हैं।

हम भगवान् दतात्रेय के विशेष आदेश से, संकेत से ही पुनः इस राजस्थान की धरती पर गोसेवा के कार्य के निमित्त आये थे, उन्हीं के आशीर्वाद से यह कार्य आज तक चला आ रहा है। यद्यपि इस शरीर को जन्म देने वाली जननी के देह त्याग करने के बाद इस क्षेत्र से मन उच्छाचित हो गया था और पुनः हम हिमालय की ओर गये। हिमालय से वापस आने का भाव नहीं था पर सद्‌गुरुओं की आज्ञा और उनके संकेत ही हमारा अपना जीवन है। भगवान् बद्रीनाथ में चातुर्मास के उपरान्त हम हमारी आध्यात्मिक जन्म स्थली पर गये थे। वहाँ हमने रात्रि विश्राम भी किया था। हमारे साथियों को इस बात की जानकारी है। पर इसके अतिरिक्त एक और बात थी उसकी जानकारी हमारे साथ में यात्रा करने वाले साथियों को भी नहीं थी और उस दिन से लेकर आज तक हमने अन्य किसी व्यक्ति को भी नहीं कही। आज उनका प्राक्ट्य उत्सव है। आज के ही दिन भगवान दत्तात्रेय का अवतरण हुआ था। हिमालय के उस भूभाग पर जिस भूभाग को अनसूया भाग कहा जाता है। अनसूया माता इस क्षेत्र का नाम है। परमसती, धर्मसती माँ अनसूया का मन्दिर भी है, आज भी है, वहीं पर भगवान दत्तात्रेय का अवतार हुआ था और इस जीवात्मा का भी आध्यात्मिक जन्म उसी स्थान पर हुआ था। वहां रात्रि विश्राम में हमें जो कुछ प्रेरणा मिली, भगवान् सद्‌गुरु दत्तात्रेय की और माँ अनसूया की, वो यही थी कि अभी भी गोसेवा के लिये आगे प्रयत्न जारी रखना है। यह हमें सद्‌गुरुदेव की प्रेरणा प्राप्त हुई है।

हम वेदलक्षणा गोवंश के संरक्षण, सम्पोषण, संवर्धन और उससे प्राप्त पंचगव्यों के अनुसंधान परिष्करण और विनियोग के जिस अभियान से गत 22 वर्षों से जुड़े हुए हैं उस अभियान को देशव्यापी, राष्ट्रव्यापी बनाया जायेगा। आज तक तो गोसेवा का, गो संरक्षण का, पंचगव्य अनुसंधान का कार्य संस्था विशेष में ही होता था। अलग-अलग संस्थाओं में होता था, पर अब यह भारत के उन सभी पवित्र हृदयों के तन-मन में होगा। हमारे जीवन में जो लक्ष्य हमारे सद्‌गुरुदेव ने दिया है, वह गोसेवा की महिमा को पुनः स्थापित करना है। गाय की सेवा और गाय की महत्ता को स्थापित करना हमारा लक्ष्य, हमारा ध्येय है। संस्था बनाना या चलाना हमारा लक्ष्य नहीं है। संस्था को बनाकर चलाना हमारा हेतु नहीं है। हमारा हेतु वेदलक्षणा गोमाता का संरक्षण है।

गौओं के संरक्षण और संपोषण के लिए हमें गोभूमियों की आवश्यकता है और गोसंवर्धन और पंचगव्यों के विनियोग के लिये ही समाज में जन जागृति पैदा करने की और समाज के सहयोग की आवश्यकता है। धेनु, धरती, प्रकृति, पर्यावरण और संस्कृति का जो यह विराट स्वरूप, गोमाता का विराट स्वरूप है इनके संरक्षण, संवर्धन, परिशोधन, सम्पोषण और समआराधन के लिये ही हम राष्ट्र में राष्ट्र के शासन की नीति को अनुकुल बनवाने का आग्रह करते हैं। साथ में समाज में इस पक्ष के भावों को बदलकर उनकी सत्यता स्वीकार करने का

निवेदन करते हैं। हमारा किसी से कोई द्वेष नहीं है, किसी व्यक्ति से, किसी समूह से, धर्म से, न सम्प्रदाय से, न सरकार के पक्ष में हो उनसे और न सरकार के विरोध हो उनसे। हम केवल गाय के पक्ष की बात करते हैं। गोवंश के अधिकारों की रक्षा की बात करते हैं, आग्रह करते हैं और उस पर कार्य करते हैं। जो इस कार्य में सहयोगी बनता है, स्वभाव से हमको अच्छा लगता है और जो इसमें विक्षेप डालता है वो आप जानते हैं, उससे हमें पीड़ा होती है। दर्द होता है कि वे सहयोग नहीं कर सकते हैं तो कोई बात नहीं पर इस सेवा कार्य में विघ्न डलकर नये पापों को अपने सिर पर क्यों बांधते हैं।

मनुष्य शरीर ईश्वर ने पूर्व जन्म के पापों से मुक्त हो करके और दुखों का अंत करने के लिये, अमरता की प्राप्ति करने के लिए और जीवन में आनन्द की अनुभूति करने के लिए दिया है। परमात्मा ने मनुष्य शरीर दुखों का अंत करने के लिये दिया है। पाप के मिटने से दुखों का अंत होगा, मृत्यु को जीतने से अमरता की प्राप्ति होगी, नीरसता के त्याग से आनन्द की अनुभूति होगी। इसके लिए मानव शरीर मिला है। मानव शरीर पापकर्म करने के लिए नहीं मिला है। पापकर्म तो क्या किसी भी प्रकार के कर्मभोग के लिए भी यह मनुष्य शरीर नहीं मिला।

पापरूपी कर्मो का फल दुःख और पुण्य रूपी कर्मो का फल सुख है। ये सुख और दुःख भोगने के लिए मनुष्य शरीर नहीं है। सुख और दुःख तो दूसरी योनियों में भी भोगा जा सकता है। मनुष्य शरीर सुख और दुःख से ऊपर उठकर अपने अन्तस्थ में विद्यमान सचिदानन्द स्वरूप की अनुभूति करने के लिए प्राप्त हुआ है। पापों का फल दुःख और दुःखों में सुख की आसक्ति का त्याग और पुण्य का फल सुख और सुख में प्राप्त सामग्री के द्वारा सेवा करने के लिए मनुष्य शरीर मिला है। दुःख में त्याग और सुख में सेवा। इसके लिए मानव शरीर प्राप्त हुआ है। ऐसा सभी सत्पुरुष, सत्शास्त्र आदि कहते हैं और जीवन का अंत भी यही बताता है कि मनुष्य शरीर की सार्थकता इसी बात में है कि शरीर छूटने से पहले-पहले ऐसी एक चीज हम सबके पास है उसकी अनुभूति कर लो। वो पास में ही है, दूर नहीं है। उसको स्वीकार करना है। अनुभूति स्वीकृति के अधीन है और स्वीकृति आस्था के अधीन है।

आस्था का आधार वेदवाणी, गुरुवाणी और संतवाणी है। वेदवाणी के आधार पर, गुरुवाणी के आधार पर, संतवाणी के आधार पर सद्‌गुरु परमात्मा की जो स्थिति है उसको स्वीकार करना। विकल्प रहित होकर उस वाणी पर विश्वास करना। ये जो स्वीकृति है उसको स्वीकार करने की शक्ति भगवान ने मनुष्य को दी है और इस स्वीकृति के अधीन उनकी अनुभूति है। जो स्वीकारकर्ता है उसको सद्‌गुरु परमात्मा के सचिदानन्द स्वरूप जो अपने हृदय में विद्यमान उसकी अनुभूति उसी समय हो जाती है जब वह पूर्णतया परमात्मा को स्वीकार कर लेता है।

परमात्मा को, जिसको वेद ने बताया है कि वह सर्वसमर्थ है, एक है, अद्वितीय है, सब काल में है, सब देश में, सबके हृदय में है, सबके अपने हैं, उस परमात्मा को इस स्वरूप में स्वीकार करने से उनकी अनुभूति होती है। पर स्वीकारोक्ति तभी आती है जब मन का मैल (मलिनता) समाप्त हो जाये, मन का पाप, रजोगुण समाप्त हो जाये।

सज्जनों! गोसेवा का अनुष्ठान प्रत्येक विरक्त, गृहस्थ, प्रत्येक वर्ण, जाति, सम्प्रदाय, प्रत्येक मनुष्य के आत्मकल्याण का सर्वसुगम साधन है। आत्मा में स्थित परमात्मा की अनुभूति का सर्वसुगम साधन है। अगर करना चाहे तो वो कर सकता है और लोग कर रहे हैं किसी न किसी भाव से। परमात्मा की अनुभूति नहीं करना चाहते हैं तो भोग की प्राप्ति, कीर्ति की प्राप्ति किसी न किसी लक्ष्य से, पुण्य अर्जित करने के लक्ष्य से गोसेवा कर रहे हैं लोग। अगर आप परमात्मा को प्राप्त न करना चाहो तो पुण्यों को बढाओ। पुण्यों को बढाओगे तो आपकी कीर्ति होगी,

आपका अनुकरण भविष्य में आने वाली पीढ़ियाँ करेगी। हमारा इस समय सर्वोच्च पुण्य का पथ है गोरक्षा और गोसेवा। अगर आप गोरक्षा और गोसेवा का कार्य करके पुण्य नहीं कमाना चाहते हो, पुण्य के परिणामस्वरूप समृद्धि, ऐश्वर्य, कीर्ति और तेज नहीं चाहते हो तो कोई बात नहीं। आपको जो मिला है, उसी में आप सुखी हो। जो आपको पद मिला है, ध् ान मिला है, सुविधा मिली है, सम्मान मिला है, अपने पूर्व जन्मों के कर्मो से अथवा इस जन्म के कर्मो से और उससे आप संतुष्ट हो तो कोई बात नहीं, पर आप नया पाप मत करो। आप पवित्र कार्य में बाध् ाा डालकर नया पाप कर रहे हो। आप दुखों का, कष्टों का आह्वान कर रहे हो, इस जन्म में भी और अगले जन्म में भी।

भले ही आपको थोड़े समय के लिए लगे कि मेरे पास बड़ा पद है, मेरे पास अधिक धन है। पद और धन आई-गई चीज है, टिकने वाली नहीं है। पद तो आज का ही है, राजनीति में पद तो पांच साल के ही हैं। पांच साल में भी कोई गड़बड़ी हो जाए तो रामजीराम। कलियुग का धन भी स्थिर नहीं है। आज देखिये! भारत के प्रधानमंत्री की जो भी सोच है, देश का या समाज का भला करना चाहते हैं, अपना नाम कमाना चाहते हैं, इतिहास पुरुष बनना चाहते हैं। क्या करना चाहते है वो तो वही जाने, पर उन्होंने जो दो बातें कही हैं- पहले गोरक्षा के विरूद्ध में बयान दिया 6-7 अगस्त को और उससे गोसेवा में बाधा आई, मेरे पास में पत्र है।

हमारे श्री पथमेड़ा गोधाम के समर्पित आजीवन ट्रस्टी, कार्यकर्ता निरन्तर गोग्रास संकलन में लगे हुए हैं। उसमें श्री हीरालालजी राजगुरु सांचोर, श्री रामचन्द्र जी पूर्व सरपंच सीलू, श्री केवलारामजी जोशी पालड़ी और श्री लक्ष्मणजी राजगुरु डेडवा, उन्होंने हमें यह चिठ्ठी लिखी है कि- महाराज आप जब से गायत्री अनुष्ठान में बैठे थे तब से लेकर आज तक हम लोग निरन्तर गोधाम के अभियान में लगे हुए हैं, हमें अच्छा सहयोग मिल रहा था। लेकिन भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा गोभक्तों के प्रति कटु दुष्प्रचार करने के बाद हमें गोग्रास में भयंकर कठिनाई आ रही है। आपसे विनम्र निवेदन है कि आप गोभक्तों को गोग्रास देने की अपील के रूप में महती कृपा करें। ये चिठ्ठी हमारे पास आई है। हम ये कहना चाहते हैं कि जो-जो किसी व्यक्ति के भक्त हो, जो किसी व्यक्ति के पीछे चलते हो, जो किसी व्यक्ति के इशारों से पाप और पुण्य का अवस्थान करते हो, उनके लिए तो हमारी अपील कोई काम नहीं करेगी, पर जो ईश्वर को मानते हो, धर्म को मानते हो, प्रकृति की मर्यादा को मानते हो तो भाइयों ऐसे किसी के बोलने से, बड़बड़ाने से अपनी निष्ठाओं को मत बदलो।

हमारे यहाँ मुगल, तुर्क, पठान, अंग्रेज आदि कई शाासक आए और चले गए। अनेक शताब्दियों तक उन्होंने शासन किया, कइयों ने दशाब्दियों तक किया। स्वतंत्र भारत के सत्तर वर्ष चले गए। इसमें भी देश के अनेक प्रधानमंत्री बने और गए पर आपका धर्म और ईश्वर कभी बदलने वाला नहीं है, आपके राष्ट्र की सनातन संस्कृति कभी बदलने वाली नहीं है। आपके पूर्वजों के द्वारा धेनु, धरती, प्रकृति, पर्यावरण और संस्कृति की रक्षा के लिए जो बलिदान दिए हैं, उनकी वे कथाएं अमर हैं, वे बदलने वाली नहीं हैं। आपके पूर्वजो ने, सद्पुरुषों ने धेनु की रक्षा के लिए, धरती के पौषण के लिए, प्रकृति के शोधन के लिए, पर्यावरण के शोधन के लिए, संस्कृति की आराधना के लिए जीवन समर्पित किये हैं। उनकी जो ओजस्वी ऊर्जा है वह कभी नष्ट होने वाली नहीं है।

इसलिए गोसंरक्षण, गो सम्पोषण, गो संवर्धन का जो अभियान है वो चलता रहेगा। कैसे चलेगा? जिन्होंने इसकी प्रेरणा दी है, उनकी शक्ति उसको चलाने में काम आयेगी। उनकी शक्ति आज तक काम आई है, आगे भी काम आयेगी। यद्यपि इस समय बहुत बड़ा संकट गोसेवी संस्थाओं पर है। यह

सुनने में आया है कि अगस्त के बाद जब समाज का 50-60 प्रतिशत सहयोग आ रहा था, 8 नवम्बर के बाद में समाज का जो वर्ग निरन्तर गोसेवा कर रहा था, करना चाहता है वो इस समय सेवा नहीं कर पा रहा है। सरकार की कानूनी अव्यवस्थाओं के कारण गो ग्रास में दान करने वाले दानदाताओं को कठिनाइयाँ आ रही है।

देश का जो धार्मिक मध्यम वर्ग गोसेवा कर रहा था। उसको गोसेवा करने में, गोग्रास का दान करने में कुछ वैधानिक अड़चने आ रही है। इससे देश की सारी सेवा संस्थाएँ प्रभावित हुई। मुझे पता नहीं लोग कह रहे हैं। धनी निर्धन सभी इससे प्रभावित हो रहे हैं। पर सेवा संस्थाएँ इससे विशेष प्रभावित हुई हैं, क्योंकि वे दान पर आश्रित थी और आज घर चलाने के लिए भी जो रुपया चाहिए, जो अपना रुपया है फिर भी वहाँ भिखारी की तरह लाइन में घंटो तक खड़ा रहना पड़ता है तब भी पैसा पूरा नहीं मिल रहा है। ऐसे में गोसेवा कैसे करें? ये एक कठिन प्रश्न हमारे सामने खड़ा हुआ है।

आप सभी से प्रार्थना है कि अभी-अभी आपके सामने कुछ विचित्र परिस्थितियाँ हुई थी गोलासन नंदीशाला को लेकर। कुछ ऐसे लोग जो स्वयं गोसेवा नहीं कर सकते हैं और दूसरे जो गोसेवा करते हैं उनको कोई अच्छा कहे तो भी उनसे सहन नहीं होता। इस तरह के गो विरोधी लोग कुछ काल से ऐसी बातें करते थे कि गोशाला चलाने वाले जमीन हड़पना चाहते हैं अथवा गोशालाओं के नाम से पैसा इकठ्ठा करना चाहते हैं। उनके लिए हमने यह बात कही थी पिछले 27 अक्टूबर की सत्संग सभा में। जो निर्णय हुआ था कि जो नंदीशाला को अतिक्रमण बता रहे हैं, बीस साल से नंदीशाला वहाँ चल रही है और उसको ये लोग अतिक्रमण बताकर नोटिस दे रहे हैं। उन्हीं के जैसे कुछ लोग वहाँ गोसेवा करने वालों को धन कमाने की बात कह रहे हैं, पैसा कमाने का कह रहे हैं। इस तरह की जो लोग उल्टी सीधी बाते कर रहे हैं। चलो जमीन भी तुम रखो, पैसे भी तुम इकठ्ठे करो और इसकी सेवा भी तुम करो। उनको जब ऐसा कहा, 5 नवम्बर तक या तो अतिक्रमण की बात है ये समाप्त हो उसके लिए क्षमा मांगी जाए, दूसरा इस तरह के नर गोवंश के लिए जो गरीब लोगों ने गोवंश छोड़ लिया है, सड़कों पर आ गया है, कसाई ले जा रहे हैं इस तरह के गोवंश को छुड़ा-छुड़ाकर, किसान की फसल को नुकसान पहुँचा रहे हैं। ऐसे बछड़ों को किसानों के द्वारा इकठ्ठा करके लाया गया है, कुछ पुलिस ने गोतस्करों से छुड़ाकर वहाँ रखे हैं। घूमते हुए बछड़ों को वहाँ रखा है। वह वास्तव में समाज के लिए विक्षेप था। प्रशासन के लिए विक्षेप था। किसानों के लिए परेशानी का कारण था। सबकी परेशानियों का निराकरण कर रहे हैं, सेवा कर रहे हैं उनके साथ आप इस तरह का व्यवहार करते हो तो भैया यह नहीं चलेगा और अब लोग इनको सहयोग भी नहीं देंगे। इसलिए चारा की स्थाई आपूर्ति, स्थाई अनुदान दे सरकार तथा ऐसा होता है कि अनुदान सरकार देती है जिससे गोशालाएँ चलती हैं।

वास्तव में सरकारों ने जब कभी अकाल पड़ा है, अटल बिहारी वाजपेयी जब प्रधानमंत्री थे तो उनकी प्रेरणा से अकाल के समय राजस्थान और अन्य प्रान्तों की सरकारें अनुदान देती थी, उसकी एक सीमा थी। अनुदान के दिनों में ही, अनुदान के वर्षो में ही अनुदान दिया जाता था। वो केन्द्र सरकार का पैसा था। प्रधानमंत्री राहत कोष से आता था और राज्य सरकारें उसको वितरण करती थी। उस समय एक जीव जन्तु कल्याण बोर्ड के माध्यम से राशि आती थी। वह केन्द्र सरकार का पैसा था। इसके अलावा राजस्थान में इस सरकार से पहले जो सरकार थी अशोक गहलोत की उन्होंने स्थाई रूप से विकलांग गोवंश को अनुदान शुरू किया था और तीन महिना अन्य निराश्रित गोवंश को दिया। तीन तरह की अनुदान राशियाँ आती थी। ....

गोभक्तमाल कथा

कथा व्यास

परम पूज्य द्वाराचार्य श्रीराजेन्द्रदासजी महाराज

......पिछले अंक से आगे

तैत्तिरीय कृष्ण यर्जुवेद की शाखा में एक कथा और गो के प्राकट्य की है। इतना स्पष्ट राम कृष्ण के अवतार चरित्र का भले ही विस्तार से वर्णन न हो वेद में, लेकिन गाय का तो आप सुन ही रहे हैं, प्रमाणिक रूप से सुन रहे हैं आह! तीन कथा हो गई। अब चौथी सुरभि के आदर भाव की कथा सुनिये।

तैत्तिरीय **ब्राह्मण शुचि, गो अवतार कथा कही ।**
करी अचेतन सृष्टि, प्राण हित यज्ञ रचायौ ।।
यज्ञ कुण्ड गो प्रगट, सबन अधिकार जतायौ ।
वायु कहौ तन दियौ, प्राण मैं अग्नि बतायौ ।।
सूर्य कही मैं दृष्टि, मुख्य विधि प्राण सुनायौ ।
प्राण अग्नि से प्रगट जान, गाय अग्नि को विधि दई ।
तैतरीय ब्राह्मण शुचि, गो अवतार कथा कही ।।

वेद में दो भाग हैं- एक मंत्र भाग और दूसरा ब्राह्मण भाग। इसलिए हमारे यहाँ वेद संज्ञा किसकी है? इसलिए महाराजजी सिद्धान्त है, सनातन सिद्धान्त है, सनातन विचारधारा का सिद्धान्त है- ''**मंत्र ब्राह्मण्यो वेद नाम धेयम्।**'' केवल मंत्र भाग वेद नहीं हैं या केवल ब्राह्मण भाग वेद नहीं हैं, अपितु मंत्र और ब्राह्मण भाग मिलाकर के वेद हैं। इसलिए जो ब्राह्मण भाग को नहीं मानते हैं उन्हें पूर्ण वैदिक नहीं कहा जा सकता हैं, वे विखण्डित वेद के स्वरूप मानने वाले हैं। इसलिए वे वेद के उपासक न होकर के यदि हम खुलकर कहें तो वे वेद के स्वरूप को छिन्न-भिन्न करने वाले वेदापराधि हैं। नाम लेने में बड़ा खतरा है, इसलिए नाम हम नहीं लेंगे। पर एक समूह ऐसा भी है जो मंत्र भाग को तो मानता है और मंत्र भाग में भी अपने मतलब के मंत्र भाग को मानता है पर ब्राह्मण भाग को नहीं मानता। कुछ तो मानता है तो उनकी मान्यता का दुष:परिणाम यह हुआ कि वे अपने को वैदिक कहलाने के बाद भी वेद की तमाम व्यवस्थाओं के विरोधी हो गये, मूर्ति पूजा के विरोधी हो गये, सपिन्डी कृत्य के विरोधी हो गये, वर्णाश्रम व्यवस्था के विरोधी हो गये और कहते अपने को वैदिक। वेदों का कोई मनमाना तात्पर्य न करे इसलिए भगवान नारायण ने व्यास रूप से प्रकट होकर अपनी कलम से वेदों का भाष्य इतिहास और पुराण के रूप में कर दिया। आपको वेद का तात्पर्य समझना हो तो इस रूप में समझो, मनमाने तरीके से नहीं। मनमाने तरीके से समझने पर अर्थ का अनर्थ हो जायेगा और जिन लोगों ने मानमाने तरीके से समझा उन लोगों ने अर्थ का अनर्थ किया है। हरि शरणम्।

तो इस प्रकार से जैसे मंत्र भाग आदरणीय है ऐसे ही वेदों का ब्राह्मण भाग भी अत्यन्त आदरणीय है। बड़ी सुन्दर-सुन्दर कथाएँ ब्राह्मण भाग में हैं। कुछ चर्चा करने से प्रसंग दूसरी तरफ चला जायेगा इसलिए हम अब इसको यहीं नमस्कार कर रहे हैं।

तैत्तिरीय ब्राह्मण भाग में गो अवतार का प्रसंग है। तैत्तिरीय ब्राह्मण भाग का मंत्र है- ''**गौरवा अग्निहोत्रम्**'' गो निश्चित ही अग्निहोत्र है। अग्निहोत्र का तात्पर्य है -यज्ञ। बोले तो गाय प्रत्यक्ष यज्ञ है। तैत्तिरीय ब्राह्मण में लिखा है कि ब्रह्माजी ने अचेतन सृष्टि कर दी। अचेतन यानी पृथ्वी, जल, वायु, आकाश आदि भूतों की सृष्टि की। उन्होंने फिर उसे जीवात्मा से युक्त करने के लिए अर्थात् उस अचेतन सृष्टि में चेतन्यता विराजित करने के लिए, प्रतिष्ठापित करने के लिए सबसे पहले हवन किया, यज्ञ किया और ब्रह्माजी के उस हवन से अग्नि, वायु और आदित्य यानि सूर्य, ये तीन देवता प्रकट हुए। ब्रह्माजी ने अग्नि, वायु और आदित्य इन तीनो देवताओं से कहा कि आप भी हवन कीजिए जिससे चेतना और आगे बढ़े तो उस समय इन तीनों देवताओं ने भक्ति

पूर्वक आहुति दी। महाराजजी तैत्तिरीय ब्राह्मण में लिखा है कि **''तेषाम् हुतात् अजायत गौरेव''** इन तीनों देवताओं ने जैसे ही भक्ति पूर्वक आहुति डाली तो अग्नि की ज्वाला के मध्य से यज्ञ कुण्ड की यज्ञ वेदी से भगवति सुरभि माता प्रकट् हो गई। बोलो गोमाता की जय। यज्ञ कुण्ड से प्रकट् है ये। ऐसी-वैसी नहीं हैं। यज्ञ कुण्ड से प्रकट् हो गई। अब रामजी वो इतनी सुन्दर हैं, इतनी सुन्दर हैं इतनी सुन्दर हैं कि उसको देखकर तीनों देवता ललचा गये। अग्नि कहते थे हमारी आहुति से यह गो प्रकट् हुई हैं, वायु कहते थे हमारी आहुति से गो प्रकट् हुई हैं और सूर्यनाराणय कहते नहीं-नहीं हमारी आहुति से गो प्रकट् हुई। अब गोमाता हैं एक और देवता तीन तो उनके मध्य विवाद हो गया। सूर्य चाहते थे गो हमको मिले, अग्नि चाहते थे हमको मिले और वायु चाहते थे हमको मिले।

महाराजजी इसमें एक सुन्दर विचार है- ब्रह्माजी ने चेतना का विस्तार करने के लिए यज्ञ किया अर्थात् चेतना के विस्तार के लिए यज्ञ जरूरी है- एक सूत्र मिला, चेतना विस्तृत करने के लिए यज्ञ आवश्यक है, उसीसे सात्त्विक चेतना फैलेगी। एक सूत्र प्राप्त हुआ, दूसरा सूत्र यह है कि सारे जीव-जगत को चैतन्यता प्रदान करने वाले सूर्य, अग्नि और वायु ये तीन भी यज्ञ से ही प्रकट् होते हैं। यह चेतना के विशेष पूंज हैं, शक्ति के पूंज हैं और इनके द्वारा ही चेतना का विस्तार जगत में होता है तथा अग्नि, सूर्य और वायु इन तीनों की चेतना जब पूंजीभूत होती हैं तो गाय बन जाती है। इसलिए इसका तात्पर्य है कि ब्रह्माजी ने इन तीन देवताओं को चेतना के विस्तार की आज्ञा दी और ये जब यज्ञकर्म में प्रवृत हुए तो चेतना विस्तार के लिए गाय प्रकट हुई। इसका मतलब है कि सम्पूर्ण प्रकृति में चेतना प्रदान करने वाले तत्त्व का नाम है गाय। सब को चैतन्यता जिससे मिले उस तत्त्व का नाम है यज्ञेश्वरी जगत्माता गोमाता। अब यहाँ झगड़ा हो गया अग्नि कहते थे हम लेंगे, सूर्य कहते थे हम लेंगे और वायु कहते थे गो हम लेंगे। झगड़ा तो प्रायः हो ही जाता हैं और उसका समाधान किसी बड़े के पास पहुँचने के बाद ही होता है तो सब ब्रह्माजी के पास गये। बोले महाराज- अब हमारे झगड़े को शांत करो, आप ही निर्णय कर दो, यह गो है किसकी? ब्रह्माजी हंसने लगे- बोले गाय सबकी है और सब गाय के ही हैं तो बोले अरे! यह तो सामान्य समाधान हुआ।

महाराज आप तो यह बताओ कि हमारे तीनों में से किसकी आहुति से गाय प्रकट् हुई? किसका विशेष योगदान है? तो श्रीब्रह्माजी ने पूछा कि किस देवता ने किसको आहुति दी है पहले यह बताओ? अग्नि ने कहा कि मैंने प्राण को आहुति दी है। प्राण देवता को आहुति दी है। वायु से पूछा कि तुमने किसको आहुति दी है? वायु ने कहा कि हमने देहाभिमानी जो देवता है, जीवात्मा है उसको आहुति दी है। देहाभिमानी, शरीराभिमानी देवता को आहुति दी है। फिर सूर्य से पूछा ब्रह्माजी ने कि आपने किसको आहुति दी? सूर्यनारायण ने कहा कि- हमने नेत्राभिमानी देवता को आहुति दी है। अब देखो यह शरीर देहाभिमानी जीव, जब तक इसमें प्राणवायु है, तब तक जीवात्मा है। प्राणवायु निकलते ही यह निर्जीव हो जाता है, नेत्र के अधिष्ठात्री देवता सूर्य हैं, इसलिए सूर्य ने अपने नैत्राधिष्ठात्री देवता को आहुति दी है। ब्रह्माजी हंसने लगे। बोले- प्राण न तो देहाभिमानी जीव के अधीन हैं और न ही नेत्रों के अधीन हैं, अपितु देह, जीव, शरीर और नेत्रादि इन्द्रियाँ ये सब प्राण के अधीन हैं। इसलिए आप सबमें प्राण श्रेष्ठ हैं। उपनिषद में भी यह कथा आई है।

छान्दोग्य उपनिषद में यह कथा आई है, वो कथा फिर लम्बी हो जायेगी। संक्षेप में कह देते हैं। उसमें बात आई है कि एक बार सम्पूर्ण इन्द्रियों के जो अभिमानी देवता हैं वे आपस में सब विवाद करने लगे कि हममें सबसे श्रेष्ठ कौन हैं? आँख कहती थी हम श्रेष्ठ हैं, कान कहते थे हम श्रेष्ठ हैं, हाथ कहते थे हम श्रेष्ठ हैं, पैर कहते थे हम श्रेष्ठ हैं यानी

जितनी ज्ञानेन्द्रियाँ, कर्मेन्द्रियाँ हैं वो अपनी-अपनी श्रेष्ठता का प्रतिपादन कर रही थी, तब पंचायत हुई महाराज। कोई झगड़ा होता है तो पंचायत जोड़नी पड़ती है, पंचायत हुई। उस पंचायत में यह निर्णय किया गया कि जिस इन्द्रिय के अभिमानी देवता के रुष्ठ होकर चले जाने से यह शरीर पापीष्ठत्तर हो जाये, अत्यन्त अपावन हो जाये, निष्क्रिय हो जाये, वही श्रेष्ठ माना जायेगा। ये निर्णय लिया गया। आँख बोली- हमारे बिना तो सारे संसार में अंधेरा है, आँख चली गई। सालों भर घूमती रही, लौट के आई तो उसने देखा शरीर का तो कुछ नहीं बिगड़ा। महाराज जो नेत्रहीन होते हैं, उनका शरीर भी बड़ा स्वस्थ रहता है, सुन्दर रहता है और यदि हम यह कहें कि कई बार नेत्रहीनों में ताकत ज्यादा होती है तो भी अतिश्योक्ति नहीं।

महाराज देखो लोहे के भीमसेन को चूर-चूर कर दिया बुढ़ापे में धृतराष्ट्र ने। कितनी ताकत होती है अंधे में। बहुत ताकत होती है। तो क्या बिगड़ा उनका? आँख वाले एक बेटा, दो बेटा ही पैदा कर पाते हैं। बिना आँख वाले ने सौ बेटा पैदा कर दिये। किसी बात में कमजोर नहीं। आँख का अभिमान चला गया कि मेरे रहने से या न रहने से शरीर की सत्ता में कोई अन्तर नहीं पड़ा।

ऐसे ही क्रमशः एक-एक इन्द्रिय गई और लौट कर आई और देखा तो शरीर यथावत मिला। लूले-लंगड़े भी निर्वाह करते हैं, टूंटे भी निर्वाह करते हैं, सब तरह के लोग निर्वाह करते हैं।

अन्त में जब सबने अपनी-अपनी शक्ति आजमा ली, शक्ति परीक्षण कर लिया तो अब प्राण की बारी आई। प्राण ने कहा- ऐसा है कि अब आप सब लोग यहीं रहिये, हम थोड़ा घूम फिरकर आते हैं। सबको बड़ा अभिमान था। हाँ! हाँ! हाँ! आप भी जाइये, घूमकर आइये। कोई बात नहीं, हम लोग तब तक संभालकर रखेंगे शरीर को। महाराजजी प्राण का जैसे ही उत्कर्मण आरम्भ हुआ, वहाँ उपनिषद में उदाहरण दिया, उपमा दी है, जैसे किसी बलिष्ठ अश्व का पैर बहुत पतले कच्चे सूत के धागों से लकड़ी की छोटी-छोटी खूंटियों से बाँधा हुआ हो और उस घोड़े में सहसा कसाघात किया जाये, वो ऐसा घोड़ा जिस पर लगाम कसना मुश्किल हो, छू दो तो उड़ जाये, ऐसे घोड़े पर कसाघात किया जायेगा, वो कितनी जोर से उछलेगा और हम आपसे पूछते हैं, उस अश्व के उछलने के बाद उन खूंटियों को उखड़ने में और उन कच्चे सूत के धागों को टूटने में कितनी देर लगेगी? ऐसे ही जब प्राणों का उत्कृमण आरम्भ हुआ तो महाराज आँख, नाक, कान, हाथ, पाँव सब ठंडे पड़ने लग गये और वे सारी इन्द्रियाँ एक साथ चिल्लाई। उनके अधिष्ठात्री देवता प्राणों से चिल्लाये त्वन् श्रेष्ठ, त्वन् श्रेष्ठ, त्वन् श्रेष्ठ। आप ही हम सबमें श्रेष्ठ हैं, आप ही श्रेष्ठ हैं, आपसे हम हैं, हम से आप नहीं हैं। इसलिए शरीर में, देह में, प्राण की ही मुख्यता होती है। आह! अब एक बात और हम आगे की कह रहे हैं, भैया इन प्राणों को भी अनुप्राणित करने वाला कौन है? **''प्राण-प्राण के जीवन जी के''** प्राणों के भी प्राण श्री ठाकुरजी हैं, जीवन के जीवन भी श्री ठाकुरजी हैं। प्राण सबसे श्रेष्ठ हैं, प्राणों की मुख्यता है।

ब्रह्माजी ने कहा हे! सूर्य देव आपने नेत्राभिमानी देवता को आहुति दी। हे! वायुदेव आपने शरीर के देहाभिमानी देवता जीवात्मा को आहुति दी किन्तु अग्नि ने प्राण को आहुति दी है इसलिए यह जो गो तत्त्व है, यह प्राण तत्त्व से प्रकट तत्त्व है, इसलिए गाय, गाय नहीं हैं गाय सबका प्राण है। जैसे प्राण के बिना शरीर की सत्ता नहीं ऐसे ही गाय के बिना संसार की सत्ता नहीं है। इस जगत की सत्ता नहीं है। गाय प्राण है। कितनी सुन्दर-सुन्दर कथाएँ हैं आह! क्या कहना प्राण है। इसलिए महाराजजी गाय प्रत्यक्ष प्राणों का पोषण करती है, प्राण वायु का पोषण करती है। एक महात्मा ने बड़ी अच्छी बात बताई। एक महात्मा ने हमसे पूछा- बोले

महाराजजी हम आपको तोला भर घी देते हैं और कहें कि आप बड़े उँचे महात्मा हो, यह तोला भर घी, दस-बारह ग्राम घी इससे पूरे शहर को तृप्त कीजिये, छोंक भी नहीं लगेगी, बगार भी नहीं लगेगा, तोला भर घी में शहर में, शहर भर की दाल छोकने लग जाओ तो दाल नहीं छूकेगी, बड़ा कठिन है। एक तोला घी में सारे शहर को तृप्त करना कितना कठिन काम है, पर हमारे यहाँ ऐसी व्यवस्था है, आप एक तोला घी से गाँव को, घर को, शहर को नहीं सारे प्रकृति मण्डल को तृप्त कर सकते हैं। आप लोग कहेंगे, उसका क्या साधन है? उसका साधन है विशुद्ध भारतीय देशी गाय का घी, गाय के गोबर के कण्डे पर उसकी आहुति दीजिये, उससे पूरा प्रकृति मण्डल तृप्त हो जाता है। हमने जबसे यह बात जानी तबसे यद्यपि हमारे निकट वाले लोग कई बार कहते हैं महाराजजी को हवन में घी ज्यादा लगता है, हम कहें चलो घी भले ही न खाएँ पर घी अग्नि में, जितनी विधि का ज्ञान हैं, उस विधि के अनुरूप अग्नि में घृताहुति अवश्य दें। उस घृत से सारे ब्राह्मण्ड का पोषण है, सारी प्रकृति का पोषण है। क्योंकि हमने यह अनुभव किया है कि घृताहुति के समय जो घी की सुगन्ध कण्डे से मिश्रित होकर के आती है और वो नासाछिद्र के माध्यम से मस्तक में जाती है तो लगता है, एक नई चेतना प्राप्त हो गई। आज वो परम्पराएँ लुप्त हो गई। केवल आस्तिक जगत यही निर्णय करले कि भारतीय देशी गाय के गोबर से निर्मित कंडे पर हम रोज एक तोला घी का हवन करेंगे, महाराज! इतने निश्चिय से भी घी की बात तो छोड़ो कंडा मिलना भी मुश्किल हो जायेगा।

हम समझते हैं लोग आवश्यकता अनुभव करें तो गाय का गोबर 50 रुपये किलो, 100 रुपये किलो बिकने लग जायेगा। लोग ठीक से प्रचार करें इस बात का। एक बात यह है कि जो एक हवन की अग्निहोत्र की पद्धति अलग होती है, उस पद्धति से द्विजातीय यज्ञोपवितधारी को ही आहुति देनी चाहिए, बाकी घृत से धूप करने का अधिकार सबको है। इसलिए शास्त्रविधि की भी सुरक्षा कंडा को प्रज्जवलित करके एक कंडे में जिसको अज्ञारी कहते हैं, एक कंडे में, अग्नि को उस कंडे को प्रज्जवलित करके और महाराज एक तोला घी और थोड़ा गुग्गल। गुग्गल की उत्पति गाय के मूत्र से है और इसको देवताओं का आहार बताया गया है। भगवान शंकर का तो विशिष्ट आहार गुग्गल ही है। वो गुग्गल खाकर ही रहते हैं, इसलिए शंकरजी को गुग्गल का होम अत्यन्त प्रिय है। प्राय: पिशाच आदि के उपद्रव से बचने के लिए गुग्गल का होम किया जाता हैं।

भूत-प्रेत, पिशाच आदि के संकट से बचने के लिए रूद्रमंत्र से, शिवमंत्र से गुग्गलाहुति दी जाती हैं। गुग्गलाहुति देने से भगवान शंकर अपनी जमात को अपने कब्जे में कर लेते हैं। भैया यह हमको दे रहा है, हमारा आदर कर रहा है, इसको थोड़ा ठीक-ठाक रखना। गुग्गल गोमाता का एक नाम है। गुग्गलगंधा और इसका अनुभव करना हो तो अनुभव कर लेना कभी। गाय को खूब बड़िया से खुजोरा करना, सहलाना, इसके बाद बिना धोएँ उस हाथ को सूंघना आपको गुग्गल की सुगन्ध आयेगी, इसलिए गोमाता का एक नाम हैं- गुग्गलगंधा। इसलिए भैया प्राण तत्त्व के लिए जो आहुति दी है, उस प्राण तत्त्व से गोतत्त्व का आदर भाव हुआ है, प्राण का भी प्राण गाय है, इसलिए यह गो अग्नि को प्रदान कर दी गई, सूर्य को नहीं दी गई, वायु को नहीं दी गई, यह गो अग्नि को प्रदान कर दी गई और अग्नि ने गोमाता को स्वीकार किया। क्यों किया? बोले अग्निहोत्र बिना गाय के संभव नहीं है। इसलिए तैतरीय ब्राह्मण ने, ऋषियों ने स्पष्ट कर दिया, बोले- गोरवा अग्निहोत्रम्। निश्चित गाय ही अग्निहोत्र है। बोलो गोमाता की जय। चार कथाएँ हो गई।

कियौ प्रजापति सुधापान, सुरभि से सुरभी भई।
ब्रह्मा दक्ष प्रजापति, सृष्टिहिं आज्ञा दीन्हीं ।

प्रजा वृति की चिंता, प्रथम प्रजापति कीन्ही।।
देवन अमृत सुलभ, मनुज कैसे पावें।
कियौ सुधा को पान, सुरभि सुरभी प्रगटावें।।
लोकमात सुरभी प्रगट, सकल सृष्टि पालक भई।
कियौ प्रजापति सुधापान, सुरभि से सुरभी भई।।

यह कथा महाभारत के अनुशासन पर्व की है। स्वतंत्र अध्याय भी सुरभि प्राकट्य अध्याय है। प्रकट अध्याय है। सुरभि प्रार्दुभाव अध्याय ही है पूरा-का-पूरा अध्याय। एक बार भगवान श्री ब्रह्माजी ने आत्मस्वरूप दक्षप्रजापति, प्रथम प्रजापति दक्ष को सृष्टि विस्तार की आज्ञा दी। दक्षजी ने सृष्टि विस्तार आरम्भ किया।

अब महाराज! ब्रह्माजी की आज्ञा से सृष्टि विस्तार वेग के काम में लगे थे, तो महाराजजी! खूब विस्तार कर दिया। बहुत बढ़ गई सृष्टि, लेकिन सब चिल्ला रहे थे हाय मरे! हाय मरे! हाय मरे! क्यों? बोले- भूखे हैं, प्यासे हैं, क्षुधातुर हैं, रोगी हैं, दुर्बल हैं। दक्ष को बहुत कष्ट हुआ। इस भूख से बिलबिलाती कुपोषण की शिकार प्रजा का दुःख हमसे देखा नहीं जाता। अब वो सब कह रहे थे कि हमको रोजी रोटी दो। रोटी, कपड़ा, मकान दो हमको। हम कैसे अपना गुजारा करें।

दक्ष प्रजापति ने कहा- चिन्ता मत करो। हम ब्रह्माजी के पास जाते हैं। ब्रह्माजी के पास गये, ब्रह्माजी ने कहा कहो, कैसे आये? मनुओं को साथ लेकर आये थे। ब्रह्माजी ने कहा- आप ब्रह्मलोक में कैसे पधारे हैं? तो उन्होंने अपनी सारी समस्यायें बताई। हमारी ये समस्यायें हैं। प्रजा भूख से त्राही-त्राही कर रही है। महाराज! देवताओं पर तो संकट कम है, क्योंकि उनके स्वर्गलोक में अमृत है वो अमृत पी करके अपना गुजारा कर लेते हैं, लेकिन धरती वाले मनुष्य लोग क्या करें? मानव जाति सुखी कैसे हो? अब ब्रह्माजी भी घबरा गये। ब्रह्माजी ने भी जब वो जनता देखी न, इतनी भीड़-भाड़, जीवों की सृष्टि तो ब्रह्माजी भी घबरा गये।

आजकल वैसे ही कलियुगी मनुष्य का एक सबसे बड़ा दोष है कि वो आलसी है। इसलिए हमारे यहाँ युगों के स्वरूप बताये गये हैं। सोता हुआ कलियुग हैं जो मुर्दे की तरह सो रहा हैं निष्क्रिय होकर वो कलियुग हैं और जो निद्रा को त्याग करके उठ के बैठ गया, अभी अंगड़ाई ले रहा है लेकिन अभी ठीक से न जगा है न सोया है, बीच की स्थिति में है वो द्वापर है और जो आलस त्यागकर अब खड़ा हो गया कि अब हमको अमुक कार्य करना है, जो खड़ा हो गया वो त्रेता है और जो क्रिया में लग गया वो सतयुग है।

इसलिए महाराजजी! महापुरुष सदा सतयुग में रहते हैं। वे सदा सतयुग में रहते हैं। कभी कलियुग में नहीं रहते। कभी द्वापर में नहीं रहते। कभी त्रेता में नहीं रहते। सदा सतयुग में ही रहते हैं। आप लोग कहेंगे- महापुरुष सोते नहीं है क्या? वो सोते भी जगने के लिए। जगने के लिए ही सोते हैं और सोते हुओं को जगाने के लिए सोते हैं। भैया! सोना आ जाये तो जीवन सफल हो जाये। सोना भी सीखना पड़ेगा।

जागन ते सोनो भलो,जो कोउ जानें सोय,
अन्तर लो लागी रहे सहजें ही सुमिरन होय ।

महात्माओं की कृपा न हो तो जगते-जगते मर जाओ भगवान नहीं मिलेंगे और महात्माओं की कृपा हो जाये तो सोते-सोते भगवान मिल जायेंगे। मुचकन्द को मिले थे न? नारदजी ने सोना सीखा दिया। अगर किसी ने सोना सिखा दिया, द्वाअक्षर का जप करते-करते सो जाओ जब नेत्र खुलेंगे तो द्वाअक्षर मंत्र के प्रतिपाद्य भगवान वासुदेव का दर्शन हो जायेगा, दर्शन हो जायेगा। इसलिए उनका सोना भी सोना नहीं है। सभी लोग नहीं जानते हैं और सभी लोगों को जनाना भी नहीं है।

........**शेष अगले अंक में**

''दुग्धं गीतामृतं महत्''

(पं. रामस्वरूपदास जी पांडेय)

''**सर्वशास्त्रमयी गीता**''- गीता सम्पूर्ण शास्त्रों का सार सर्वस्व है। तथा पंचमवेद महाभारत का सार सर्वस्व है। '**भारतमृत सर्वस्वम्**' है।
यद्यपि वेदों की महिमा निर्विवाद है, वह भगवान के सहज निश्वास रूप हैं।

''**तस्य निःश्वसितं वेदः**''। परन्तु गीता का प्राकट्य तो ''**मुखपद्माद् विनिसृतः**'' अर्थात् भगवान के मुख कमल से निसृत हुआ है। अतः गीताजी की महिमा महान है। ''**एकंशास्त्रं देवकी पुत्र गीतम्**'' भगवद् गीता सर्वशास्त्रमयी अर्थात् शास्त्र सम्मत होने से ''**एकं शास्त्रं**'' है। उसकी समानता नहीं की जा सकती। वह ''**संसारमलनाशनतम्**'' है अतः ''**गीता सुगीताकर्तव्यः**'' गीता का सावधानी तथा श्रद्धाभक्ति पूर्वक अध्ययन करना चाहिए। गीता का अर्थ सुरभित होने से उत्कृष्ठ गंधयुक्त है, सर्वोत्कृष्ठ है।

सर्वोपनिषदोअ गावो दोग्धागोपालनन्दनः।
पार्थो वत्स सुधीभोक्ता दुग्धं गीतामृतं महत् ।।

सम्पूर्ण उपनिषद् गाय है अर्थात् सम्पूर्ण उपनिषदों के अभिप्राय ब्रह्मविद्या को गाय कहा गया है। गीताजी के प्रत्येक अध्याय के समापन पर ''**श्रीमद् भगवद्गीतासु उपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे**'' लिखा रहता है। अर्थात् वेदों का अंतिम भाग वेदान्त ही उपनिषद् कहे जाते हैं। गीता सर्वसम्मत योगशास्त्र प्रकाशक ब्रह्मविद्या स्वरूप उपनिषद् है। यहाँ उपनिषदों के लिये बहुवचन का प्रयोग है। अतः सभी उपनिषद् गायें हैं पर उनसे निसृत दूध में अभेद है। गीतादुग्ध सर्वसम्मत समान है। पुनः गोपालकृष्ण जो गोसेवा के आदर्श को प्रकट करने को ही गोप या गोपाल रूप में प्रकट होते हैं। गायों की अतिवृष्टि से रक्षा के कारण जिन्हें सुरभि माता ने उनका अभिषेक सम्पन्न कर गोविन्द पद से विभूषित किया। वह गोपालकृष्ण गोपालनन्दनः गोपराजनन्द के नन्दन नन्दनन्दन ''**दोग्धा**'' अर्थात् गोदोहन करने वाले दोग्धा हैं। पुनः दुग्ध दोहन प्रणाली की ओर संकेत किया गया है अर्थात् गोदोहन के पूर्व वत्स जाकर गाय के आंचल में मुँह मारता है, उसे पन्हाता है। गाय का वात्सल्य ही दुग्ध रूप में उमड़ता है। वत्स उस दुग्ध का पान करता है, उसके पश्चात् दोहन अर्थात् दो स्तनों से ही दूध निकालने को दोहन कहते हैं। अर्थात् वत्स के लिये गाय का दूध है पर गाय को तो '**गावो विश्वस्य मातरः**' अर्थात् गाय जगत की माता है। माता से भी अधिक महिमामयी जीवनभर दूध पिलाने वाली है। अतः संसारभर के जीवों के पोषण को गोपाल दुग्ध दोहन करता है। उस उपनिषद् गाय को पन्हाने वाला वत्स पार्थ अर्थात् पृथा पुत्र अर्जुन है। अर्जुन का अर्थ निश्छल, निश्कपट सरल भक्त है। धर्मसमूढ़चेता वत्स अर्जुन उद्विग्न विपन्नशंसयस्त धर्मसमूढचेता है। वह **वत्सतरः क्षुधार्तः** है। आर्तभाव से रंभा रहा है। '**शिष्यस्तेऽहं**' साधि मां त्वां प्रपन्नम्'' अनन्यतापूर्वक आत्मनिवेदन कर रहा है। अर्थात् भगवद्शरणागतिपूर्वक गोवत्स के समान शास्त्र गोमाता की अपने पोषण को प्रतीक्षारत है। ''**स्तन्यं यथा वत्सतरः क्षुधार्त**'' है। वह सुधीर्भोक्ता पार्थ वत्स जब उपनिषद् गाय को पन्हाता है तब वत्स के साथ-साथ संशयग्रस्त दीन-हीन अज्ञानीजनों के पोषण को गोपाल गोप गीतामृत दुग्ध का दोहन करता है। यहाँ गीतामृतं तथा दुग्धामृतं दोनों के गुणों में समानता बताई गई है। यह गीतामृत तथा दुग्धामृत

उस स्वर्ग के अमृत से विशिष्ट हैं, जिसे पीकर देवता सदा भोगपरायण उद्विग्न रहते हैं। परीक्षितजी को भागवतामृत पान कराते समय उस देवलोक के अमृत को शुकदेवजी ने ''**क्व काच: क्व मणिर्महान**'' अर्थात् देवताओं के अमृत को कांच का टुकड़ा जैसा सामान्य तथा ज्ञानामृत को अमूल्यमणि कहा, देवताओं का उपहास किया।

विनिमय समान मूल्य की वस्तु का होता है। अर्थात् सर्वसुलभ दुग्धामृत तथा गीतामृत का देवलोक के अमृत से वैशिष्ट है। इसका तात्पर्य है कि गाय का दूध ऐसी सतोगुणी श्रद्धामयी भाव भूमि का सृजन करता है, जिसमें ब्रह्मविद्या योगशास्त्र की प्रतिष्ठा की जा सकती है। अर्थात् हम सबके परम कल्याण श्रेय-प्रेय, तुष्टि-पुष्टि के लिये गोदुग्ध और गीतामृत एक समान समर्थ हैं। पर वह सुधीभोक्ता अर्जुन वत्स की उपेक्षा करने से सुलभ नहीं हो सकता। अर्जुन अर्थात सरल हृदय भक्त में ही ज्ञान वैराग्य प्रतिष्ठित होता है।

गीता के प्राकट्य की प्रारम्भिक भूमिका पर मैं जब विचार करता हूँ, तो मुझे लगता है कि अर्जुन ने शास्त्र सदाचार सम्मत उदारतापूर्ण बहुत ही अच्छी बातें कहीं हैं। अर्जुन के कथन में मुझे गुण-ही-गुण दिखाई देते हैं। उसके कथन में गुरुजनों के प्रति समादर, मातृ बन्धुवर्ग सम्बन्धियों के प्रति त्याग और सहिष्णुता, संतोष, निर्लोभता, भविष्य के दुष्परिणामों के प्रति जागरूकता, समाज के कल्याण की भावना, त्याग तपस्या के प्रति अभिरूचि आदि-आदि गुण दृष्टिगोचर होते हैं। मेरा हृदय अर्जुन के उदार चिंतन को धन्यवाद देने को उतावला हो जाता है, पर भगवान श्रीकृष्ण उस चिंतन का अभिनन्दन न करके उसकी निंदा या उपहास करते हैं। यहाँ पण्डितों जैसी बाते निंदा के अर्थ में हैं। उसे कश्मल कहते हैं। अनार्यजुष्ट, अकीर्तिकर, कैव्य, अनुपयुक्त क्षुद्र हृदय की दुर्बलता, अस्वर्ग्य न जाने क्या-2 कह कर उसकी निंदा और उपहास पूर्वक आश्चर्य से पूछते हैं ''**कुतत्वा करमलमिंद विषमे, समुपस्थितम्**'' अर्जुन तुम्हारे भीतर यह दोष कहाँ से आया। इतना सुनकर भी अर्जुन अपने चिंतन की पुष्टि, अनेक तर्क देकर करता है। उसे तो प्रतीक्षा थी कि श्रीकृष्ण उसके चिंतन का समर्थन कर धन्यवाद देंगे। उसके सभी तर्क जानदार शास्त्र सम्मत, सदाचार सम्मत लगते हैं, पर भगवान के समर्थन न कर निंदा करने से वह स्वयं का शंसयग्रस्त '**धर्मसम्मूढ़ चेत:**' कार्पण्यदोपहत मानने लगता है। भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन के इस बुद्धिवाद अर्थात् युद्ध न करने के निश्चय की निंदा की । वास्तव में यह वही अर्जुन है जिसने आर्तब्राह्मण की गाय की रक्षा को निर्धारित मर्यादा का उल्लंघन स्वरूप बारह वर्ष का वनवास स्वीकार किया था। महाराज विराट की गायों की रक्षा करते हुए भीष्म, द्रोर्णाचार्य, कर्ण, दुर्योधन, कृपाचार्य आदि के छक्के छुड़ा दिये थे। अपनी शिष्या उत्तरा के लिये गुड़िया बनाने के लिये महारथियों के रंग-बिरंगे वस्त्रों का संग्रह किया था। तब मैं गम्भीर होकर विचार करता हूँ कि अर्जुन के चिंतन की पृष्ठ-भूमि में कहाँ खोट है जिससे उसके विचारों का उत्तुंग प्रासाद गिर जाता है। भगवान उसका अभिनन्दन न कर निंदा क्यों करते हैं? क्या कारण है? तब हमें भारतीय चिंतन की पृष्ठभूमि को गम्भीरता पूर्वक समझना होगा। कठोपनिषद में धर्मराज सत्पात्र नचिकेता को उपदेश करते हैं-

श्रेयश्च प्रेयश्च मनुष्यमेतस्तौ सम्परीत्य विविनक्ति धीर:। श्रेयो हि धीरोऽभिप्रेत्य वृणीते, प्रेयो मन्दो योगक्षेमाद् बृणीते।।

वत्स नचिकेता, मनुष्य के जीवन में प्रेय तथा श्रेय दोनों उपस्थित होते हैं उनमें से बुद्धिमान पुरुष श्रेय का वरण करते हैं। जिससे वह कल्याण को

प्राप्त कर लेते हैं, पर मंदबुद्धि मनुष्य सद्यः भौतिक सुखों को देने वाले प्रेय का वरण कर नष्ट हो जाते हैं, कल्याण नहीं कर पाते।

अर्जुन का चिंतन भले ही धर्मसम्मत लगता है, पर उनके चिंतन की पृष्ठभूमि श्रेय की सीमा में नहीं आती। आध्यात्मिक चिंतन पर आधारित नहीं है। चिंतन का आधार ''**नासतो विद्यते भावो ना भावो विद्यते सतः**'' है। आत्मा की अमरता और संसार की नश्वरता, परिर्वतनशीलता है। आज गोमाता की महिमा समझने में यही सबसे बड़ी बाधा है। आज जिसे नेतागण विकास कहते हैं वह परिणाम में विनाशकारी ही दिखाई दे रहा है। आतंकवाद, दुराचार, महंगाई, गुण्डागर्दी, व्यभिचार, उत्कोच, अनैतिकता, भौतिकवाद, भ्रष्टाचार इन सबके मूल में गोमाता की उपेक्षा है। नेतागण गव्य पदार्थो से नहीं गोमांस विक्रय से, गोवंश के विनाश से देश को उन्नत बनाना चाहते हैं। गोभक्त भारतीय जनता से मत प्राप्त कर प्रजातंत्र की भावना का दिवाला निकाल रहे हैं। अंग्रेजों के पिटठू उनसे भी आगे बढ़कर गोहत्या समर्थक हो रहे हैं। आज तो लगता है गोहत्या ही उनका राष्ट्रधर्म हो गया है। भारतमाता की जय का नारा लगाने वाले अभागे नहीं समझ रहे हैं कि गोमाता भारतमाता ही नहीं जगत्माता है। अपनी माता, धरती माता से भी परम पूज्या है। वेद शास्त्रों में उसे अवध्या कहा गया हैं। गोहत्यारे को वेदों ने गोली से मारने का आदेश दिया है। गायको भारतीय संस्कृति का आधार कहा है। वृषभ साक्षात् धर्म का स्वरूप है तथा गोमाता सर्वदेवमयी मुक्तिभुक्ति चतुर्थपुरुषार्थ प्रदाता है। जब तक हम गव्य पदार्थो का सेवन नहीं करेंगे, हमारी बुद्धि या चिंतन शुद्ध पारमार्थिक नहीं हो सकता। हमें गाय का आदर करना ही होगा। गाय की सत्ता होने पर ही हमारी सत्ता है। यदि गाय सुखी हैं तभी राष्ट्र सुखी होगा। हमारे चिंतन की पृष्ठभूमि भारतीय आध्यात्मिक नहीं भोगवादी पाश्चात्य है। शास्त्र में लिखा है-

देव ब्राह्मण गो साधु साध्वीभिः सकलं जगत्।
धार्यते वै सदा तस्मात् सर्वे पुण्यतमाः सदा।।

अर्थात गाय, ब्राह्मण, देवता साधुसंत तथा पतिव्रता स्त्रियों ने इस पृथ्वी को धारण कर रखा है। ये पुण्यात्मा परम पूज्यनीय हैं। इनकी रक्षा करना सबका अनिवार्य कर्त्तव्य है।

पाण्डवों के द्यूत में पराजित हो जाने पर अन्यायी अत्याचारी दुष्ट दुर्योधन ने असहाय द्रोपदी के वस्त्राहरण का प्रयत्न किया था। तब असहाय द्रोपदी ने आर्तस्वर में पुकारा था- हे गोपाल! मैं आपकी अनाथ गाय हूँ। इन दुष्टों से मेरी रक्षा करो। आप तो गोविन्द हैं- ''**गोविन्द द्वारिकावासिन्**''। गोविन्द शब्द सुनकर ही भगवान कृष्ण ने वस्त्रावतार धारण कर द्रोपदी का लाज बचाई थी। भगवान की भी परम पूज्या इष्ट गोमाता है, उसकी पुकार सुनकर ही वह उसकी रक्षा करने धराधाम पर अवतरित होते हैं। दुष्टों का संहार कर गोमाता की रक्षा करते हैं। यही परम धर्म हैं। भगवान श्री कृष्ण कहते हैं ''**स्वधर्ममपि चावेक्ष्य न विकम्पितुमर्हसि**'' स्वधर्मपालन का विचार कर आपको दृढ़ता से स्वधर्मपालन करना चाहिए। '**स्वधर्मेनिधनंश्रेयः**'' स्वधर्मपालन करते हुए मरना ही श्रेयकर है। '**स्वकर्मणा तमभ्यर्च सिद्धिं विन्दन्ति मानवाः**'' गोरक्षादि सत्कर्मो से गोपाल का पूजन कर मनुष्य कल्याण प्राप्त करते हैं। तब शरणागत अर्जुन ने कहा- ''**करिष्ये वचंन तव**'' मैं आपकी आज्ञा पालन करूँगा। अतः गीतामृत, दुग्धामृत तथा गंगोदक का पान करने से परम कल्याण की प्राप्ति होती है। गाय, गीता, गंगा और गायत्री ये अभेद हैं। यही भारतीय चिंतन की आधारशिला या पृष्ठभूमि है। गाय बिना गति नहीं। ''दुग्धं गीतामृतं महत्'' दुग्धामृत अर्थात् गव्यपदार्थ तथा गीता सम्मत चिंतन ही जीवका कल्याणकर्त्ता है।

'' जय गोमाता ! जय गोपाल'' !

हरिः ॐ तत् सत् जय गुरुदत्त

(पं. रामस्वरूपदास जी पांडेय)

अत्रेरपत्यमभिकाङ्क्षत आह तुष्ट, दत्तोमयाहमिति यद् भगवान् स दत्तः।
यत्पादपंकजपराग पवित्रदेहा, योगर्द्धिमापुरूमयीं यदुहैहयाद्याः।।

पद्यानुवाद-

अत्रि और अनुसूया माता पुत्र हेतु तप कीन्हो,
ब्रह्मा विष्णु महेश प्रगट हो ''दत्त'' मुदितवर दीन्हौ।
हैहय यदुअलर्क प्रहलादिक परशुराम गुरु कीन्हौ,
पद पंकज पराग से जिनने योग भोग सब लीन्हौ।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः।।

परब्रह्म स्वरूप गुरु की इस त्रिदेवमयी स्तुति में ब्रह्माण्ड गुरु दत्तात्रेय का ही वन्दन किया गया है। वह ब्रह्मा, विष्णु, महेशमय परब्रह्मस्वरुप दत्त भगवान हैं। श्रीमद्‌भागवत के एकादश स्कन्ध के सातवें अध्याय में जीव के आत्मकल्याण के लिये गुरुतत्व की व्याख्या की गई है।

श्री उद्धवजी ने अपनी असमर्थता बताते हुए कल्याण प्राप्ति के लिये भगवान श्रीकृष्ण से प्रार्थना की तब भगवान ने ब्रह्माण्ड गुरु दत्तात्रेय के उपाख्यान का वर्णन किया।

भगवान ने कहा- कल्याण में विचारशील व्यक्ति ''लोकतत्व विचक्षणाः'' अर्थात् अपने अनुभव तथा लोक के तत्व का गंभीर विचारपूर्वक आत्मसात् कर उनसे जीव आत्मकल्याण की शिक्षा ग्रहण कर कृतार्थ हो सकता है। गुरुतत्व ब्रह्म के समान व्यापक है। विचारशील होना मनुष्य का विशिष्ट गुण है। जैसे छोटे बालक को प्रत्येक वस्तु खिलौना लगती है उसी प्रकार विचारशील व्यक्ति के लिये संसार की प्रत्येक वस्तु प्रेरणादायक गुरुरूप है। विचारहीनता ही हमारे विनाश का मूलकारण है। दत्तात्रेय के स्वरूप का दर्शन कर यदु ने पूछा-

त्वं तु कल्पः कविर्दक्षः सुभगोऽमृतभाषणः।
न कर्ता नेहसे किंचिज्जडोन्मत्त पिशाचवत्।।

तब दत्तात्रेयजी ने अपने प्रेरणा के श्रोत चौबीस गुरुओं का उपाख्यान सुनाया और अंत में कहा कि मनुष्य ब्रह्माजी की सर्वश्रेष्ठ कृति है। उन्हें पूर्ण विश्वास हो गया कि अब यह सर्व साधन सम्पन्न जीव अपनी बुद्धि के विचारबल से आत्मकल्याण रूप भगवद् प्राप्ति करने में समर्थ है। ''**ब्रह्मावलोकधिषणं मुदमाय देवः**'' ब्रह्माजी अत्यंत प्रसन्न हो गये। मनुष्य का यह विचारशीलता का गुण ही उसका सच्चा गुरु है।

दत्तलीलामृत में महर्षि अंगिरा ने अपने छात्र दीपक को दत्तात्रेय चरित्र सुनाया है। प्रायः सभी

पुराणों में दत्त भगवान का चरित्र है। श्रीमद्भागवत के अनुसार महर्षि अत्रि और अनुसूया की निष्ठा से प्रसन्न होकर ब्रह्मा, विष्णु और महेश त्रिदेवों ने उन्हें दर्शन दिये। तीनों देवों ने अपने भेद-अभेदमय परब्रह्म स्वरूप का परिचय दिया और पुत्र बनने की अपनी अभिलाषा को बताया। उन्होंने कहा- "**प्रणवाक्षर ॐ के मध्ये ये तीनों एका**" तथा त्रिदेवों ने कहा आपके मंत्र के प्रभाव से हम तीनों उपस्थित होकर वरद हुए। आप जैसे माता-पिता से हम जन्म लेकर धन्य होना चाहते हैं। अत्रि का अर्थ अ+त्रि एकत्व है। ऋग्वेद के पाँचवें मण्डल में मंत्रहण्टा के रूप में महर्षि अत्रि का नाम आया है।

दूसरी कथा के अनुसार महर्षि अत्रि नर्मदा के उत्तरी तट पर व्यास क्षेत्र में निवास करते थे। उस समय अनुसूया के सतीत्व की महामहिमा सुनकर त्रिदेवों की देवियों को आश्चर्य हुआ। वे उनकी लोकोत्तर कीर्ति को सहन नहीं कर सकीं। माता अनुसूयाजी ने महासती शाण्डिली के सूर्योदय रोकने पर सूर्योदय की मर्यादा की रक्षा कर शाण्डिली के पति को पुनर्जीवित किया। श्री माण्डव्य ऋषि ने शाण्डिली के पति कौशिक को शूली हिल जाने पर क्रोधित होकर सूर्योदय होते ही पर मरने का श्राप दिया था। माता अनुसूया ने उसे पुनः जीवित कर दिया। शाण्डिली को सौभाग्य प्राप्त हुआ।

श्री लक्ष्मी, सावित्री तथा उमा ने सती अनुसूया के सतीत्व की परीक्षा लेने के लिये अपने-अपने पतियों को विवश किया। त्रिदेव भी माता अनुसूया की महिमा को प्रगट करना चाहते थे। अतः त्रिदेवों ने साधु रूप धारण कर नग्न हो भिक्षा देने की याचना की। तब अनुसूयाजी ने तीनों को बालक बनाकर निर्वस्त्र होकर दुग्धपान कराया और पालने में सुला दिये। इसके पश्चात् तीनों देवियों लक्ष्मी, उमा, सावित्री ने अनुसूया से क्षमा याचना करके अपने पतियों को प्राप्त किया। उसी समय तीनों देवों के वरदान से एक दिव्य ज्योति निकली जो अत्रि में प्रविष्ट हो गई। पुनः महर्षि अत्रि के नेत्रों से एक दिव्य ज्योति निकली, जो महासती अनुसूया के उदर में प्रविष्ट हो गई। नौ मास नौ दिन पूरे होने पर मार्गशीर्ष पूर्णिमा के दिन त्रिदेव प्रगट हुए। उनके तीन सिर और छः भुजायें थीं। ऊपर के दो हाथों में शंख चक्र, मध्य के हाथों में त्रिशूल और डमरू तथा नीचे के हाथों में कमण्डल और माला थी। सिर पर जटाजूट और काशाय वस्त्र थे। अत्रि तथा अनुसूया ने उनकी स्तुति की। पुनः माता अनुसूया ने वात्सल्यवश बालक रूप में होने का आग्रह किया। माता के प्रेमाग्रह को सुनकर परम उदार भगवान के मुँह से इकाइक निकला "दत्त"। अतः उनका नाम दत्त प्रसिद्ध हुआ। दत्त+आत्रेय से दत्तात्रेय बना। प्रथम तो त्रिदेव तीन बालकों के रूप में अवतरित हुए थे। ब्रह्मा से चन्द्रमा, रुद्र से दुर्वासा तथा विष्णु से दत्त। किन्तु चन्द्रमा और दुर्वासा माता-पिता से आज्ञा लेकर, चन्द्रमा आकाश तथा दुर्वासा पृथ्वी पर तप करने चले गये। तब माता को उदास देखकर दत्त ने तीनों के समष्टि रूप में अपने को व्यक्त कर माता को बाललीला का सुख दिया। अत्रिजीने यज्ञोपवीतादि संस्कार कर वेदों का अध्ययन कराया। इसके पश्चात् दत्तात्रेय निर्लेय दिगम्बर वेश में पातालेश्वर चले गये।

सती शाण्डिली के आग्रह पर महर्षि अत्रि और अनुसूया पैठन में रहने लगे। भगवान दत्तात्रेय अवधूत परमहंस परम्परा के प्रतिपादक थे। श्री दत्तात्रेयजी महान योगी थे। आपकी दिनचर्या आश्चर्यजनक है। आपकी उपस्थिति अनेक स्थानों

पर रहती हैं। सह्याचल आपका निवास स्थान हैं। माहुरगढ़ में शयन करते हैं। नित्य गंगा स्नान करते हैं, गुरुक्षेत्र में आचमन, गन्धर्व पत्तन गाडगापुर में ध्यान, धूतपापेश्वर में भष्म धारण करते हैं, करहाट में संध्या करते हैं। पण्डरपुर में तिलक करते हैं। कोल्हापुर में भिक्षाटन करते हैं। तुंगभद्रा में जलपान करते हैं। बद्रीनारायण में सत्संग करते हैं। रेवतगिरिनारायण पर विश्राम करते हैं। पश्चिम सागर में सांय संध्या करते हैं।

परमपुण्य स्थल पथमेड़ा भी भगवान दत्तात्रेय की तपस्थली है। उन्हीं की सत्प्रेरणा और शुभाशीष से वहाँ बहुत बड़ी संख्या में गोवंश की सेवा हो रही है। श्री दत्तात्रेय भगवान परम गोभक्त हैं। गिरिवर पर्वत पर गोचारण करने वाले एक अंन्धे ग्वालबाल दाना को उन्होंने नेत्र दान किये। गोमाता को प्यासा देखकर पर्वत पर ही जल का श्रोत प्रगट कर दिया उनके पार्श्व में सदा गोमाता के दर्शन होते हैं। वे गोवंश के संरक्षक-संवर्धक देव हैं।

भगवान दत्तात्रेय ने बृहस्पति के अग्रज महर्षि संवर्त से श्री विद्या की वैदिक उपासना पद्धति प्राप्त की। संवर्त जो काशी नगरी में विक्षिप्त से घूमते रहते थे। उन्हें कोई पहचान नहीं सकता था। श्री विद्या में त्रिपुर सुन्दरी की आराधना की जाती है। त्रिपुर रहस्य ग्रन्थ में लिखा है कि भगवान परशुराम ने भगवान दत्तात्रेय से श्री त्रिपुर सुन्दरी की उपासना पद्धति ग्रहण की। भगवान परशुराजी क्षत्रिय नरसंहार के पाप की निवृत्ति के लिये महर्षि संवर्त के पास गये। समयाभाव होने के कारण उन्होंने दत्तात्रेयजी के पास भेज दिया। परशुरामजी ने देखा कि एक परम सुन्दरी वैश्या अपनी प्रेम चेष्टाओं से दत्तात्रेयजी को आकृष्ट कर रही हैं और सुरा से पूर्ण पात्र लिये हुए हैं। इस दृश्य को देखकर भी परशुराम विचलित नहीं हुए। वे विनीत भाव से उन्हें प्रणाम कर उनके चरणप्रान्त में बैठ गये।

श्री दत्तात्रेयजी ने उनका स्वागत किया और कहा तुम्हारी श्रद्धा ने हमें संतुष्ट कर दिया है। तब उन्होंने किसी भी उपासना के पूर्व ''**जिह्वोपस्थ जयो धृति:**'' अर्थात जीभ और उपस्थ को जीतना ही धृति है। तुम सत्पात्र हो इसलिये मैं तुम्हें तांत्रिक प्रत्यभिज्ञा दर्शन का उपदेश करता हूँ। इसका मूल तत्व परम शिव है। सोऽहमस्मि इसी प्रत्यभिज्ञा से जीव कृतार्थ होता है। पर यह प्रत्यभिज्ञा भगवति जगदम्बा श्री त्रिपुर सुन्दरी की कृपा के बिना नहीं हो सकती। अत: मैं तुम्हें भगवती त्रिपुर सुन्दरी की उपासना का तत्व ज्ञान व विधियें बता रहा हूँ। मुझसे दीक्षा प्राप्त कर तुम मलय पर्वत पर चले जाओ। श्री सुमेघाऋषि ने श्री त्रिपुर रहस्यग्रन्थ में इसका वर्णन किया है। इसमें श्री महालक्ष्मी, श्री सरस्वती तथा पार्वती जी के रूप में प्रादुर्भूत पराम्बा की लीलाओं का वर्णन है। श्री ब्रह्मादि देवों ने असुर संहार की शक्तियाँ पराम्बा की कृपा से ही प्राप्त की। इस प्रकार गुरुवर दत्तात्रेयजी ने श्री विद्योपासना का मर्म, आराधना का प्रकार, श्री चक्र स्थापन तथा पूजन का उपदेश किया। श्री परशुरामजी ने इस विद्या को प्राप्त कर ''श्री परशुरामकल्प सूत्र की रचना की। यह ग्रन्थ दत्तात्रेय आराधना का आधारभूत ग्रन्थ है। सौराष्ट्र में सिद्धपीठ गिरनार में दत्तात्रेय साधना का सिद्धस्थान है। वहाँ अनेक सिद्ध संत हुए हैं। स्वयं श्री दत्तात्रेय भगवान ने दत्त संहिता ग्रन्थ की रचना कर भगवती त्रिपुर सुन्दरी की तांत्रिक उपासना श्री चक्र आदिकी पूजा का विधान बतलाया है।

श्री दत्तात्रेयजी ने त्रिपुर रहस्य ग्रन्थ में **सौभाग्याष्टोतरशतनाम् स्त्रोत्र** सुनाया, जिसे भगवती जगदम्बा पार्वती को अनुरोध से शंकरजी ने सुनाया

था। यही बृहस्पति प्रोक्त श्री गौरी अष्टोत्ररशतनाम् स्तोत्र भी है। इसी विद्याका उपदेश दत्तात्रेयजी ने कार्तवीर्य अर्जुन को दिया था। इस योग के द्वारा मानसिक शारीरिक तथा आध्यात्मिक समुन्नत शक्ति प्राप्त होती है। परम ध्येय ध्यानयोग है जिसका उपदेश दत्तात्रेयजी ने श्री अलर्क को दिया। इसे ही ब्रह्म प्राप्ति का उपाय बतलाया है। इस योगमार्ग में दत्तात्रेयजी ने प्राणायाम को साधना का मूल माना है। श्री दत्तात्रेयजी के उपदेश से प्रहलाद को वैराग्य तथा संतोष आदि गुणों की शिक्षा मिली। श्रीयदु को गुरुतत्व की शिक्षा मिली। परशुरामजी को श्री विद्या की शिक्षा तथा कार्तवीर्य अर्जुन को परम शक्ति सम्पन्न बनाया। कार्तवीर्य अर्जुन के स्मरण से चुराई हुई या नष्ट हुई वस्तु प्राप्त होती है।

कार्तवीर्यार्जुनो नाम राजा बाहु सहस्त्रवान्।
यस्य स्मरण मात्रेण गतंनष्टं च लभ्यते।।

कार्तवीर्य अर्जुन हृदयवंशी राजा था। गर्गाचार्यकी प्रेरणा से वह भगवान दत्तात्रेय की शरण में गया था। उनकी कृपा से उसने अपरिमित बल प्राप्त किया था।

ब्रह्मपुराण, श्री हरिवंशपुराण, महाभारत, विष्णुध् ार्मोत्तर पुराण, श्रीमद्भागवत पुराण, मार्कण्डेय पुराण तथा श्री कृष्णयामल तंत्र आदि ग्रन्थों में दत्तात्रेयजी के पवित्र चरित्रों का वर्णन हुआ है। श्री दत्तात्रेय गीता में मानव जीवन का उद्देश्य अद्वितीय आनन्दमय ब्रह्म की प्राप्ति बतलाया है। इसमें योग साधना से प्राप्त सिद्धियों को उपद्रवों की संज्ञा दी है। परम ध्येय ध्यान योग है जिसकी शिक्षा आपने मदालसा के पुत्र अलर्कको दी। सध्याद्रि के शिखर पर श्री दत्तभगवान का स्थान है। इस अत्रि के आश्रम को आजकल माहुरगढ़ के नाम से जानते हैं। माहुरगढ़ में भगवान दत्तात्रेय की पादुकायें विराजमान हैं।

श्री दत्तात्रेय सम्प्रदाय में अनेक समर्थ महापुरुष हुए हैं। चौदहवीं सदी में श्री नृसिंह सरस्वती ने दत्तात्रेय सम्प्रदाय को व्यवस्थितरूप दिया। उनके शिष्य गंगाधर सरस्वतीजी ने गुरुचरित्र ग्रन्थ की रचना की। इसी सम्प्रदाय में श्री एकनाथजी, श्रीजनार्दन स्वामीजी, अघोटी बाबा कनीरामजी या केनारामजी श्री अवधूत सदा शिव श्री विद्येन्द्र स्वामी, श्री अकल कोट स्वामीजी , श्री सौर्य बाबा, श्री वासुदेवानन्द सरस्वती आदि प्रसिद्ध संत हुए हैं।

आचार्य श्री गोरखनाथजी जो मध्ययुग में श्रीनाथ सम्प्रदाय के संस्थापक थे। श्रीनाथ सम्प्रदाय के ज्ञानदीप ग्रन्थ में श्री दत्तात्रेय गोरखनाथ संवाद का वर्णन मिलता है। उज्जैन नरेश भर्तृहरिजी गोरखनाथ के ही शिष्य थे। श्री गोरखनाथ सम्प्रदाय का प्रचार गुजरात, महाराष्ट्र तथा राजस्थान में अधिक है। गोरखपुर उनका शक्तिपीठ है। श्री दत्तात्रेयजी साक्षात् नारायण हैं, वे आज भी अपने भक्तों को दर्शन देकर कृतार्थ करते हैं। आज जो महाराष्ट्र, राजस्थान, गुजरात में गोधन का उत्कर्ष दिखाई देता है, वह भगवान दत्तात्रेय की प्रत्यक्ष कृपा का ही परिणाम है। श्री दत्तात्रेय भगवान गोवंश के संरक्षक हैं, उन्हें गोसेवक, गोभक्त अत्यंत प्रिय हैं। उनका चरणाश्रय लेकर आराधना करने से गोसंरक्षण में अवश्य ही सफलता प्राप्त होती है। स्तुति–

जयति अत्रि नन्दन, जयति जय ब्रह्माण्ड गुरु,
जयति परम गुरु, जयति जग वन्दन।
अनुसूया नन्दन, भक्तमन रंजन, हे दया सागर,
सुनहु गोक्रन्दन।
श्री दत्तात्रेय वन्दन, तब चरण वन्दन,जय अवधूत
शिरोमणि, करहु गो रक्षण।।

जय गोमाता! जय गोपाल!

मैं हूँ भीमा भारत का

(एक नंदी की आत्मकथा)

एक गोसेवक

(इस कहानी की विषय वस्तु, घटनाएँ, जाति, धर्म, पात्र आदि सब काल्पनिक हैं। यदि इसकी कथावस्तु, घटनाएँ, जाति, धर्म, पात्र आदि किसी से मेल खा रहे हों तो इसे किसी के साथ जोड़ना नहीं चाहिये, इसे केवल संयोगमात्र ही समझना चाहिये। कहानी का उद्देश्य देश में आज गोवंश की जो बहुत बुरी स्थिति है उससे समाज को रूबरू करवाना है ताकि देशवासी गोवंश का आदरमान कर कल्याण के मार्ग पर चलें)

.........पिछले अंक से आगे

यदि दुनिया में 5 प्रतिशत लोग भी गोभक्त हो जायें तो हमारे जीवन में बड़ा बदलाव आ सकता है। वहाँ मैं अब आराम से रहने लगा। यहाँ हमारे लिये सब व्यवस्थाएँ थी। दिन में दो बार चारा डाल देते थे वे लोग। कभी हरा चारा मिलता, कभी सूखा। मन हर समय तृप्त रहता और कभी-कभी तो वहाँ गोभक्त गुड़, रोटियें आदि लेकर आते और खूब प्रेम से प्रसाद करवाते। धन्य हैं ऐसे गोभक्त जो हमसे इतना प्रेम करते हैं।

धीरे-धीरे जानकारी हुई की वहाँ कुछ गोभक्त मिलकर एक खुली गोशाला चलाते थे। दानदाता अपनी ओर से चारा भिजवा दिया करते और ये गोभक्त गायों को चारा परोसने की व्यवस्था करते। समय-समय पर पानी की हौज भी राह चलते लोग टैंकरों से भर जाते। वहाँ पास में एक कॉलेज था, उसके छात्र और अध्यापक सभी गोभक्त थे, वे पूरी व्यवस्था सम्हाले हुए थे। हर जगह अलग-अलग प्रकार के लोग मिलते हैं। यहाँ पर भी महादेव का मंदिर तो था पर अन्दर बाबा लोग थे, वे गायों के प्रति विशेष भाव वाले नहीं थे। वरना सेवा का कार्य तो बाबाओं को करना चाहिये और गृहस्थों को उनसे प्रेरणा लेनी चाहिये। मगर यहाँ उल्टी गंगा बह रही थी।

वहाँ मंदिर के बाबा भी दूध पीने के लिये एक गाय रखते, पर उसे खाने को कुछ देते नहीं। वो भूख मर-मरकर दुबली हो गई। मैं देखता, वह खूंटे के बंधी रहती। जब भी उसे खोलते, सीधी भागकर हमारे साथ चारा खाने आती। वहाँ तो निश्चित समय पर ही चारा डाला जाता था। अतः चारा मिलता तो खाकर पेट भरती नहीं तो वहाँ से सीधे कचरा खाने निकल पड़ती। इस प्रकार कचरा खा-खाकर उसने अपनी मौत को बुला लिया। एक दिन वह बहुत बीमार हो गयी। डाक्टर को बुलाया गया। कोई ईलाज नहीं हो सका और वह गोलोक चल बसी। इसका पाप उन बाबाओं को लगना था। संजोग देखो आगे इन बाबाओं की क्या गति होती है?

तकदीर ने एक खेल रचा। वहाँ के मठाधीश ने पैसा कमाने की एक योजना बनाई जिसमें एक कथा स्थल का निर्माण करवाया गया। अब कथा करने के लिये कहीं से एक कम उम्र के बाबा को लाया और उसे प्रशिक्षण देना आरम्भ किया। वहाँ बस्ती में ही छोटी-छोटी कथाएँ करवाते और भोली जनता को मूर्ख बनाते। मैंने तो प्रारम्भ में ही भाँप लिया था कि ये गुरु-चेला दोनों चाल-चलन के गड़बड़ हैं, क्योंकि हर समय उनके पास महिलाओं की भीड़ लगी रहती। धीरे-धीरे उन दोनों ने कुछ महिलाओं और लड़कियों से निकटता कर ली। एक दिन गुरु चंदा करने कहीं गया हुआ था, वो चेला पड़ौस की एक लड़की के संग भाग गया। मंदिर का जो भी धन हाथ लगा, लेकर चलता बना।

घटना की जानकारी लोगों में हुई तो चारों ओर आक्रोश फैल गया। समाचार करके बड़े बाबा को बुलाया गया और उसे लोगों ने चौबीस घण्टे में दोनों को हाजिर करने का हुक्म दिया। बाबा जानबूझकर या वास्तव में ऐसा नहीं कर सका। जनता ने मिलकर

बाबा को पीटा और मंदिर से निकाल दिया। अपनी मेहनत से अच्छा-खासा चंदा करके बहुत अच्छी व्यवस्था बनाये थे अपनी सुख-सुविधा हेतु पर देखो गोसेवा विहीन होने से कन्हैया ने ऐसा खेल खेला कि बड़ी बेइज्जती से उसे पदच्युत होना पड़ा और मुफ्त का कमाया सब हाथ से निकल गया। बाबाजी दोनों से गये, माया मिली न राम। यदि वे गोमाता की सेवा करते तो ठाकुरजी प्रसन्न होकर उसे अपने सिर का मुकुट बना देते।

अब मैं वहाँ आराम से रह रहा था, पर एक दिन एक अंग्रेजी पशु के साथ जंगल की तरफ घूमने निकल पड़ा। वहाँ एक खेत में मकई की लहलहाती फसल देखकर मन ललचाने लगा। हम दोनों उस खेत में घुस गये। खूब जमकर प्रसाद पाया और लौट आये। अच्छा हरा चारा खाने को मिला तो मैं रोज-रोज जाने लगा। एक दिन खेत के मालिक ने चार-पाँच लोगों को बुलाकर मुझे पकड़ लिया। वे बहुत निर्दयी लोग थे। पहले तो मुझे बहुत पीटा और फिर एक रस्सी से मुझे मरने के लिये जंगल में एक पेड़ के बांधकर छोड़ गये। दर्द के मारे मैं सटपटा रहा था। वहीं पड़े-पड़े भूखे-प्यासे मैंने तीन दिन तो निकाल दिये, पर अब बिना पानी के प्राण निकलने को तड़पने लगे। आप जरा अंदाजा लगायें, इस प्रकार की मौत कितनी भयानक होती है? तिल-तिल शरीर कटकर मौत आती दिखती है। घायल होने के बावजूद प्राण बचाने हेतु वहाँ से छूटने की बहुत कोशिश की, पर असफल रहा। चौथे दिन एक राहगीर ने मुझे इस प्रकार बंध ा देखा तो वह मेरे निकट आया। वह मेरी हालत देखकर तुरन्त समझ गया। उसने मुझे बंधन से छुड़ाया, पर अब मैं चलने लायक नहीं बचा। उस सज्जन ने वहीं खड़े-खड़े उस कॉलेज में गोभक्तों को मोबाईल से समाचार किये और स्थान आदि सब बताये। उस दिन मुझे मोबाईल का सदुपयोग समझ में आया। यदि इसका दुरूपयोग नहीं किया जाय तो यह एक चमत्कारिक मशीन है।

थोड़ी ही देर में वे 15-20 गोभक्त छात्र और उनके मास्टरजी एक टेम्पो लेकर आ गये मेरे पास। उन्होंने तो तुरन्त उठाकर मुझे टेम्पो में बिठा दिया और कॉलेज में ले आये। वहाँ मुझे एक बाल्टी पानी पिलाया। मैं तो इतना प्यासा था कि 20 बाल्टी पानी पी जाता, पर उन्होंने एक साथ इतना पानी नहीं पिलाया, वरना मेरा तो पेट ही फूट जाता। रुक-रुककर उन्होंने मुझे 5 बाल्टी पानी पिलाया। अब मेरी प्यास काफी शांत हो गई। इतने में वे एक चिकित्सक को बुला लाये। मेरी हालत को देखते हुए उन्होंने तुरन्त ग्लूकोज चढ़ाना आरम्भ कर दिया। उसी में सब प्रकार की दवाइयों वे बारी-बारी से डाल रहे थे, मैं यह सब देख रहा था। मेरे शरीर में जगह-जगह मवाब पड़ गया था। डॉक्टर ने उसे साफ किया और दवाई लगाई। फिर प्रतिदिन दिया जाने वाला ईलाज उन गोभक्तों को समझाया और वह चला गया। उस कॉलेज के लोगों ने मिलकर दो माह तक मेरा ईलाज और सेवा की और मुझे पहले जैसा ही स्वस्थ बना दिया।

वहाँ का चौकीदार रातभर कुत्तों और सुअरों से मेरी रखवाली करता था। बहुत भले लोग थे वे। 30 के करीब गोवंश उनके पास था, जिसकी छात्र और अध्यापक सब मिलकर सेवा करते। मेरे जैसे बीमार और घायल गोवंश की भी वे अपने प्रियजन की भांति सेवा करते। इस प्रकार वे लोग सब मिलकर के सहज में ही गोसेवा का लाभ लेते। मैंने वहाँ से शिक्षा पाई कि यदि भविष्य में मुझे किसी विद्यालय में अध्यापक बनने का मौका मिला तो ऐसा गोसेवा का कार्य मैं और मेरे छात्र अवश्य करेंगे। आप जरा सोचें कि वे लोग नहीं होते तो मेरी क्या दशा होती? ऐसे लोगों से गोवंश को कितना लाभ हुआ। मेरी तो समस्त विद्यालयों से निवेदन है कि देश में हमारे गोवंश के लिये ऐसे कठिन समय में वे उक्त कॉलेज से प्रेरणा लेकर उनसे जितना सम्भव हो, सेवा कार्य अवश्य करें।

वहाँ एक बार किसी कार्य से फौजी आये और कई दिनों तक उस कॉलेज में रुके रहे। उन्होंने भी मेरी खूब श्रद्धा और प्रेम से सेवा की। कई फौजी तो इतने गोभक्त थे कि रातभर मेरे पास आग जलाकर मुझे ठण्ड से बचाते। सर्दियों की ऋतु थी, कड़ाके की ठण्ड पड़ती थी। 10-12 फौजी आग जलाकर मेरे पास बैठ जाते। मुझे उस समय बहुत अच्छा लगता। मेरे मन में एक प्रश्न रोज आता कि वे गोरक्षक क्षत्रिय कहाँ गये, जिनकी तलवारें गायों की रक्षा के लिये सदैव लहराती थी। उनसे गोघाती डरते थे या उनके सिर धड़ से अलग हो जाया करते थे। काश! वे जहाँ भी चले गये हैं, वहाँ से लौट आयें। इसी प्रकार भारतीय सैनिकों से भी मेरी अपेक्षा है कि वे मंगल पांडे की भांति गोभक्त बनें और गोरक्षा से राष्ट्ररक्षा का आशीर्वाद पायें। गोवंश को मारने में नहीं, उसकी रक्षा करने में देश का भला है?

मैं अच्छी प्रकार से चलने-फिरने लगा। पास में ही न्यायालय था, वहाँ बहुत वृक्ष थे। अच्छी छाया देखकर दिन को मैं अक्सर वहाँ विश्राम करने चला जाता। एक दिन की बात है, मैं वहाँ पेड़ों की छाया में बैठा था। तीन छोटे-छोटे बच्चे एक महिला को पकड़कर बुरी तरह से रो रहे थे। उस महिला ने उन्हें धक्का देकर दूर पटक दिया। वे रोकर फिर माँ-माँ कहकर आकर उससे लिपट गये। उसने इस बार लात मारकर उनको दूर फैंक दिया और एक आदमी के साथ वहाँ से गाड़ी में बैठकर रवाना हो गई। दूर खड़ा उन बच्चों का गरीब पिता यह सब देख रहा था, पास में आकर बच्चों को चुप करने लगा। बच्चे चुप होने का नाम नहीं ले रहे थे। छोटी दो साल की बच्ची गला फाड़-फाड़कर माँ-माँ पुकारकर रोती-रोती बेहोश हो गई।

देखते-देखते काफी भीड़ इकट्ठी हो गई। वे लोग आपस में जो चर्चा कर रहे थे, उस आधार पर मुझे जो बात समझ में आई वो इस देश के कानून और व्यवस्था की पोल खोलने वाली है। तीन बच्चों की माँ अपने बच्चों और पति को छोड़कर परपुरुष के साथ भाग गई। उसके पति द्वारा अपनी पत्नी के अपहरण का मामला पुलिस में दर्ज करवाया। पुलिस ने उन दोनों को पकड़कर न्यायालय में पेश किया। उसके पति व बच्चों को पता था कि आज उसे वहाँ लाया जायेगा, तो बच्चों को माँ से मिलाने के लिये वह लेकर आया और सोचा कि बच्चों को देखकर तो माँ का हृदय पिघल जायेगा और वह वापिस घर आ जायेगी। पेशी पर उसे पूछा गया कि आप अपनी मर्जी से गई या जबरदस्ती तुम्हें ले जाया गया है। महिला ने कहा- मैं अपनी मर्जी से गई हूँ और इनके साथ ही रहना चाहती हूँ। मुझे अपने घर वापिस नहीं जाना है। जज साहब ने पुलिस को हुक्म दिया कि इनको इनकी इच्छा से सुरक्षित जहाँ ये चाहते हैं, वहाँ छोड़ा जाये। महिला को अधिकार है कि वह अपनी इच्छा से किसी के साथ रह सकती है।

वाह! देखो, कैसा अंधा कानून है। इतने छोटे-छोटे निरीह भोले बच्चों के कोई अधिकार नहीं? क्या उनको अपनी माँ को अपने घर रखने का कोई अधिकार नहीं। इस देश में सब अधिकार क्या व्यभिचारियों के लिये ही हैं? माँ के बिना बच्चे कैसे जीवन गुजारेंगे, इसका अनुभव तो उसे ही है जिसने बचपन में माँ को खोया हो। इसी प्रकार पति या पत्नी के व्यभिचारी होने की पीड़ा भी जिसने भोगी है वही जानता है। कानून बनाने वालों ने आज इन तीन बच्चों के साथ बहुत बड़ा अन्याय किया और वह कानून व्यभिचारियों का रक्षक बन बैठा। जब छोटी बच्ची को होश आया तो फिर माँ-माँ चिल्लाने लगी, पर तब तक उसकी माँ वहाँ से जा चुकी थी। वह गरीब आदमी कानून से हारकर रोता हुआ, अपने रोते हुए तीन बच्चों को लेकर वहाँ से चला गया। जनाब यह तो कचहरी है, यहाँ तो रोज अलग-अलग प्रकार के केस आते हैं। कोर्ट और वकीलों के लिये तो ये केस होते हैं, पर जिसका सब कुछ लुट जाता है, अपनी पीड़ा तो वही जानता है।....*अगले अंक में*

चलो घर लौट चलें

(पं रामस्वरूपदास पाण्डेय)

(इस कहानी की विषय वस्तु, घटनायें, जाति, धर्म, पात्र आदि सब काल्पनिक हैं। यदि इसकी विषय वस्तु, घटनायें, जाति, धर्म, पात्र आदि किसी से मेल खा रहे हों तो इसे किसी के साथ जोड़ना नहीं चाहिये, इसे केवल संयोगमात्र ही समझना चाहिये।) *.....पिछले अंक से आगे*

घर आकर स्वाध्याय प्रारम्भ कर दिया। संस्कृत विषय श्री राधे पण्डितजी ने पढ़ा दिया। हिन्दी विषय दीनदयालजी ने तथा इतिहास आदि को किशोरी ने पढ़ा दिया। परीक्षा काल में किशोरी स्वयं उसके साथ परीक्षा दिलाने गई। पन्द्रह-बीस दिन श्री त्रिपाठीजी प्राचार्यजी के यहाँ रह कर परीक्षा दी। इन दिनों श्री त्रिपाठीजी ने गौरा का सौम्य स्वभाव और कार्य कुशलता देखी। पूरे घर का सामान व्यवस्थित देखकर एक दिन उन्होंने पूछा- यह सब सामान किसने जमाया है? किशोरी ने कहा कि मेरी सहेली गौरा ने मुझसे पूछकर यह सब काम किया है। कभी-कभी गौरा तरह-तरह का नाश्ता बनाकर खिलाती। तब किशोरी कहती- गौरा भोजन बनाने में बहुत चतुर है। गौरा की सभी प्रकार की योग्यता को देखकर श्री त्रिपाठीजी के मन में कामना जागी कि यदि मुझे केशव के लिये ऐसी बहू मिल जाय तो मेरा उजड़ा घर व्यवस्थित हो जायेगा। त्रिपाठीजी का यह सोचना था कि शहर की लड़की घर-गृहस्थी के संचालन में योग्य सिद्ध नहीं होती है। पढ़ाई के कारण उसको बचपन से गृहस्थी सम्हालने, भोजन बनाने आदि के कार्यो का अभ्यास नहीं कराया जाता। पर संकोच से उन्होंने किसी से कुछ कहा नहीं।

गौरा परीक्षा पूर्ण करके सुजानपुरा चली गई। इसी बीच एक घटना घट गई। श्री त्रिपाठीजी एक जगह एक आदमी के साथ मोटर साईकिल पर एक निमंत्रण में गये थे। लौटते समय एक साईकिल वाला अचानक सामने आ करके टकरा गय। अचानक मोटर साईकिल रोकने से त्रिपाठीजी को कुछ चोट लग गई। चोट ज्यादा गंभीर नहीं थी पर एक्सीडेण्ट का नाम बड़ा होता है। यह समाचार सब जगह फैल गया। अत: त्रिपाठीजी के घर एक्सीडेण्ट महोत्सव का सुयोग बन गया। उन्हें देखने उनकी पुत्री सरोज तथा दामाद विनोद आये। सुजानपुर से किशोरी और दीनदयाल आये। एक दिन श्री परमानन्दजी और राधेलालजी शास्त्री भी आये। अनायास सबका सम्मेलन हो गया।

तभी श्री त्रिपाठीजी ने अपनी पुत्री सरोज तथा किशोरी से अपने हृदय का भाव व्यक्त किया। दीनदयालजी से बात की। पहले तो सरोज ने किसी विशेष पढ़ी-लिखी शहर की लड़की का प्रस्ताव रख कर विरोध किया पर बाद में त्रिपाठीजी के समझाने से सहमत हो गई। तब परमानन्दजी की उपस्थिति में राधे पण्डितजी से दीनदयाल ने गौरा का केशवदासजी से संबन्ध करने की चर्चा चलाई। श्री राधे पण्डितजी ने केशवदास की योग्यता और अच्छे संस्कार देख इस प्रस्ताव को सहर्ष स्वीकार कर लिया। एक दिन सब लोगों के बीच में यह चर्चा चली और सबकी सहमति से यह विवाह निश्चित हो गया।

निश्चित लग्न में श्री राधे लालजी शास्त्री ने उत्साहपूर्वक गौरा का विवाह कर दिया। विवाह में राधे पण्डितजी ने खूब दिल खोलकर दहेज दिया। दीनदयाल और श्री प्रकाश ने विवाह में स्वागत आदि की अत्यंत सुन्दर व्यवस्था बनाई । इस विवाह में श्री सुखानन्दनजी शास्त्री ने विवाह संस्कार कराने का कर्मकाण्ड कराया। उस समय श्री प्रकाश की संस्कृत योग्यता और सुन्दर संस्कार देखकर उनके मन में अपनी पुत्री मंदाकिनी से सम्बंन्ध करने की

भावना जागी। उन्होंने एक दिन दीनदयालजी से सम्पर्क किया। दीनदयालजी ने बताया कि अभी श्री प्रकाशजी आयुर्वेदाचार्य करके पंचगव्य चिकित्सा पर शोध कर कर रहे हैं, शायद इस वर्ष में उनका यह कार्य पूर्ण हो जायेगा। तब बात की जायेगी।

श्री राधे शास्त्री ने ऐसा विवाह किया कि उसकी प्रशंसा सर्वत्र हुई। त्रिपाठीजी परम संतोषी थे और राधे पंडितजी परम उदार। लोग कहने लगे ''सम समधी देखे आजू'' केशवदास व गौरा वर-वधू की सुन्दर जोड़ी ने सबका मन हर लिया। किशोरी व सरोज ने गौरा को अपने मधुर व्यवहार से खूब प्रसन्न कर दिया। गौरा ने त्रिपाठीजी के घर को स्वर्ग बना दिया। श्री केशवदासजी ने एम.ए.एम.एड. परीक्षायें उत्तीर्ण की थीं। व्याख्याता पद पर पदस्थापन के लिये उनका आदेश आ गया। सरकारी नौकरी को अधिक महत्व दिया जाता है। वह भविष्य में जल्दी ही प्राचार्य पद पर पहुँच जायेंगे। इसी आधार पर इस नौकरी में जाने का विचार किया। उसी समय विद्यालय समिति की बैठक हुई। श्री त्रिपाठीजी वृद्ध हो गये थे, उन्होंने सेवानिवृति हेतु अपना प्रार्थना पत्र प्रस्तुत किया। उस समय सब लोगों ने विचार किया कि त्रिपाठीजी की कार्यकुशलता और तपस्या के परिणाम स्वरूप संस्था ने उन्नति की है। पूरे सम्भाग में इतना अच्छा परिणाम किसी भी विद्यालय का नहीं रहता। विद्यालय की छात्र संख्या का रहस्य यहाँ की अच्छी पढ़ाई की व्यवस्था है। श्री त्रिपाठीजी का मार्गदर्शन तो संस्था को सदा आवश्यक रहेगा।

तब सबने विचार किया कि उनके पुत्र केशवदास को प्राचार्य पद पर नियुक्त कर दिया जाय। त्रिपाठीजी के सामने प्रस्ताव रखा गया, पर त्रिपाठीजी मौन रह गये। समिति ने निर्णय लिया कि हम उन्हें वही वेतन देंगे जो सरकारी संस्थाओं में दिया जाता है। अधिक आग्रह करने पर त्रिपाठीजी ने अपने पुत्र केशवदास से परामर्श किया। उन्होंने कहा- सरकारी नौकरी में तुम्हें गौरा के साथ बाहर जाना पड़ेगा। तब मेरी सेवा कौन करेगा? आज्ञाकारी पुत्र केशवदास ने अपने पिताजी के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। श्री केशवदासजी उस संस्था के प्राचार्य पद पर प्रतिष्ठित हो गये। श्री त्रिपाठीजी के मार्गदर्शन में उन्होंने संस्था की और अच्छी व्यवस्था बना दी। इस प्रकार त्रिपाठीजी की उजड़ी गृहस्थी फिर से सज गई। वे अत्यंत सुखी हो गये। त्रिपाठीजी ने वहाँ विद्यालय में ही समिति की अनुमति से एक छोटी सी गोशाला प्रारम्भ कर दी। गोसेवा के निमित वे प्रतिदिन विद्यालय आते और विद्यालय में भी सबको मार्गदर्शन देते रहते।

सुजानपुरा में श्रीराधे पण्डितजी इतने आदरणीय और लोकप्रिय हो गये कि लोग उन्हीं से सभी धार्मिक कार्य सम्पन्न कराते। एक बार गंगा मौसी ने प्रस्ताव रखा कि श्रावण के महीने भर आप हमारा अभीषेक का कार्यक्रम करवा दें। श्री राधे लालजी ने स्वीकार कर लिया। श्रावण के महीनभर वारिणी नदी के घाटों पर स्त्री-पुरुषों की भीड़ लगने लगी। प्रातः काल से दस बजे पूर्व तक शंकरजी का अभिषेक होता। गनपत बब्बा सम्पूर्ण पंचामृत की सामग्री एकत्र कर देते। उनके लड़के फूल, बेलपत्र आदि का संग्रह कर देते। गंगा मौसी के साथ जशोदा तथा अन्य स्त्रियाँ पूजन में भाग लेती। सायंकाल शिवजी के मंदिर पर ही श्री राधे पण्डितजी सत्संग कथा सुनाते। इस एक महीने के सत्संग कार्यक्रम ने पूरे सुजानपुरा को भक्ति रस से सरोबार कर दिया। गंगा मौसी ने अपने परिवार के सब लोगों को अहमदाबाद से बुलवा लिया। उन्होंने वारिणी नदी के घाटों की मरम्मत करवा दी। श्रावण का मास पूर्ण होने पर शान्ति हुई। उस उपलक्ष में लघु रूद्रयज्ञ ब्राह्मणों को आमंत्रित किया गया। उनके भोजन का विचार किया। पूरे नगर के सभी लोगों का भोजन हुआ। इतनी सुन्दर व्यवस्था हुई कि सभी लोगों को संतोष हुआ। इस कार्यक्रम में श्री दीनदयालजी ने पूरा-पूरा सहयोग किया ।...**शेष अगले अंक में**....

दिसम्बर माह में हुई ''भारत गोदर्शन यात्रा'' का संक्षिप्त विवरण

श्री पथमेड़ा गोधाम की प्रेरणा से बृज चौरासी कोस के अन्तर्गत ''**श्री जड़खोर गोधाम**'' में माँ सुरभि के उपासनात्मक **गोनवरात्रि** के मध्य ''**गोपाष्टी**'' के पावन पर्व पर राष्ट्रव्यापी रचनात्मक गोसेवा महाभियान के अन्तर्गत संत महापुरुषों के सान्निध्य में ''**अखण्ड गोज्योति**'' का प्राकट्य हुआ।

इस यात्रा की अवधि 33 महिना है और यह यात्रा चारधाम, सप्तपुरि, द्वादश ज्योतिर्लिग सभी प्रमुख तीर्थो, गोष्ठों सहित देश के 109 पवित्र स्थलों का प्रवास करेगी। इसके माध्यमसे श्रीसुरभि यज्ञ, गोभक्तमाल कथा, गोपूजन, गोमहिमा, गोविज्ञान संगोष्ठियाँ, गोसेवा संकल्प सभाओं आदि के द्वारा जन-जन के मन-मस्तिष्क में धेनु, धरती, प्रकृति, पर्यावरण एवं संस्कृति के संरक्षण, सम्पोषण, संवर्धन, संशोधन तथा समाराधान के सर्वकल्याणकारी भावों व विचारों को जागृत और स्थिरता प्रदान करने का सद्प्रयास किया जायेगा।

भारत गोदर्शन यात्रा के प्रायोजक 'भारतीय गोसेवा संकल्प समिति' द्वारा 109 दिव्यज्योति की अखण्ड स्थापना एवं 109 गोकुल संवर्धन शालाओं के निर्माण का पावन लक्ष्य पूरा किया जायेगा। इसके अतिरिक्त गोसेवार्थ गोचिकित्सालयों, गोअभ्यारण्यों, गोसंरक्षण केन्द्रों की स्थापना एवं संचालन का संकल्प देश के गोप्रेमियों को करवाया जायेगा। गोभूमियों को अतिक्रमण मुक्त करवाकर सीमांकित, विकसित व आरक्षित करवाया जायेगा, पर्वत, अरण्य के प्राकृतिक स्वरूप को सुरक्षित रखने और गंगा-यमुनादि समस्त नदियों की पवित्रता, अविरलता व निर्मलता बनाये रखने एवं भारतीय सनातन संस्कृति से संस्कार सम्पन्न जीवन निर्माण का सर्वहितकारी संकल्प भारतवासियों को ग्रहण करने का आग्रह किया जायेगा।

इन्हीं सर्वकल्याणकारी रचनात्मक भावों के साथ 3 दिसम्बर को परम पूज्य द्वाराचार्य श्री राजेन्द्रदासजी महाराज सहित श्रीधाम के सैकड़ों संतों के साथ श्रीमलूकपीठ गोशाला, श्रीधाम वृन्दावन से ''**अखण्ड गोज्योति रथ**'' के साथ 'भारत गोदर्शन यात्रा' का शुभारम्भ हुआ।

3 दिसम्बर को प्रात: 8 बजे से मलूकपीठ गोशाला में विराजमान गोवंश के लिये गोभण्डारा एवं पं. श्रीगंगाधरजी पाठक के आचार्यत्व में शास्त्रोक्त विधि से गोपूजन, गोपरिक्रमा करने के पश्चात ''**अखण्ड गोज्योति**'' को रथ में विराजमान किया। मध्याह्न 1:00 बजे पथमेड़ा महाराजजी के सानिध्य में संकीर्तन करते हुए ''**अखण्ड गोज्योति रथ**'' सांय 4 बजे प्रथम अखण्ड गोज्योति की स्थापनार्थ मथुरा के विश्राम घाट पहुँचा। वहाँ पर पंडित श्रीदाऊदयालजी के नेतृत्व में विश्राम घाट के ठीक सामने श्रीठाकुर, वल्लभाचार्यजी, श्रीदुर्वासाजी के मंदिर में ''**अखण्ड गोज्योति**'' का पूजन एवं स्वागत हुआ। तत्पश्चात श्रद्धेय स्वामीजी महाराज के सानिध्य में ''**अखण्ड गोज्योति**'' लेकर नोकायान द्वारा विश्रामघाट पहुँचकर पंडित दाऊदयालजी एवं पंडित श्रीगंगाधरजी पाठक के नेतृत्व में वेदोक्त विधि से ''अखण्ड गोज्योति'' की स्थापना की गई। तत्पश्चात् वहाँ से '**अखण्ड गोज्योति**' का काफिला सांय 9:00 बजे रमणरेती, गोकुल पहुँचा। संध्या के पश्चात परम श्रद्धेय श्रीस्वामीजी एवं परम श्रद्धेय श्रीकार्ष्णिगुरुशरणानन्दजी महाराज की विस्तार से गोविषयक चर्चा हुई।

4 दिसम्बर को प्रात: श्रीस्वामीजी महाराज ने ''**अखण्ड गोज्योति**'' का पूजन करके रमणरेती परिसर में विराजमान ठाकुर श्रीरमणबिहारीजी के

दर्शन करने के पश्चात् बैठक स्थल पर परम श्रद्धेय कार्ष्णिगुरुशरणानन्दजी महाराज एवं मलूकपीठाधीश्वर श्रीराजेन्द्रदासजी महाराज के साथ सत्चर्चा की। उसके बाद तीनों महापुरुषों ने एक ही पंगत में बैठकर भोजन प्रसाद ग्रहण किया। मध्याह्न के समय यमुना मिशन के प्रमुख श्रीप्रदीपजी बंसल के नेतृत्व में श्रीस्वामीजी महाराज ने गोशाला सहित रमणरेती के प्रकल्पों का दर्शन एवं निरीक्षण किया और श्रद्धेय श्रीस्वामीजी महाराज के संकल्पानुसार प्रदीपजी बंसल ने ''एक गोकुल संवर्धनशाला'' खोलने का संकल्प लिया। सांयकाल में श्रीस्वामीजी की कृष्णाकृपाधाम के प.पू. श्रीज्ञानानन्दजी महाराज एवं वाराहपीठ के महंत श्रीरामप्रवेशदासजी महाराज के साथ गोविषयक चर्चा हुई।

5 दिसम्बर को प्रात: 9: 00 बजे श्रीस्वामीजी महाराज के सान्निध्य में 'अखण्ड गोज्योति'' का शास्त्रोक्त विधिपूर्वक पूजन करने के पश्चात 'अखण्ड गोज्योति रथ' के साथ संकीर्तन करते हुए गजानन्द स्वरूप हाथी को आगे करके शोभायात्रा के साथ रमणरेती गोशाला की परिक्रमा की। तत्पश्चात् 'अखण्ड गोज्योति'' के साथ श्रीस्वामीजी महाराज द्वारा श्री ओरछाधाम के लिये प्रस्थान किया गया। झांसी में श्रीसिद्धेश्वर महादेव मंदिर पर 'गोज्योति'' का दिव्य स्वागत एवं दर्शन-पूजन हुआ। सांय 9: 00 बजे कनक भवन आश्रम, ओरछाधाम पहुँचे, वहाँ पंडित श्री रामस्वरूपदासजी पाण्डेय, श्रीद्वारिकाजी मिश्र एवं श्री कमलेशजी सहित सैंकड़ों गोभक्तों ने **'अखण्ड गोज्योति'** का अद्भुत स्वागत किया और **'अखण्ड गोज्योति रथ'** श्रीसुरभि गोशालाश्रम, ओरछा में विराजमान हुआ।

6 दिसम्बर को सायंकाल में श्रद्धेय श्रीस्वामीजी महाराज ने गोभक्तों के साथ ''श्रीरामराजा सरकार'' के दर्शन किये। सम्पूर्ण भारत में गोहत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगे, सम्पूर्ण भारतवर्ष में गोवंश सुखी हो, उनका संरक्षण, सम्पोषण और संवर्धन हो, इस प्रकार का सर्वकल्याणकारी प्रार्थना-पत्र ''रामराजा सरकार'' के नाम से समर्पित किया।

7 दिसम्बर को 11: 00 बजे श्रीस्वामीजी महाराज ने कनक भवन, ओरछा से बरवुआसागर श्रीदण्डी स्वामी श्रीशरणानन्दजी सरस्वती महाराज के निर्वाण दिवस पर आयोजित उत्सव में पधारकर समाधि स्थल पर पुष्पांजलि अर्पित की। तत्पश्चात वहाँ उपस्थित सभी गण्यमान्य भक्तों ने श्रीस्वामीजी को पुष्प देकर आशीर्वाद लिया। उसके बाद श्रीस्वामीजी महाराज ने पधारे हुए सैंकड़ों श्रद्धालुओं को आशीर्वचन देते हुए कहा कि आज दण्डी स्वामी श्रीशरणानन्दजी महाराज का निर्वाण दिवस है। संतों का निर्वाण दिवस मनाया जाता है और देवताओं का जन्म दिन। संतों को अगर सच्ची श्रद्धांजलि देना चाहते हो तो संतों की वाणी के अनुसार अपने जीवन को बनाओ। इस अवसर पर श्रीस्वामीजी महाराज ने गीताजयन्ती उत्सव पर गीताजी के 108 पाठ कराने की घोषणा की। तत्पश्चात परिसर में श्रीरामजी और श्रीहनुमानजी महाराज के दर्शन कर पुन: कनक भवन, ओरछा पधारे।

8 दिसम्बर को सांय 3: 00 बजे श्रीस्वामीजी महाराज के सानिध्य में सभी गोभक्तों ने ओरछाधाम में बैतवाजी के तट पर स्थित श्रीबेतवेश्वर महादेव के दर्शन किये। श्रीस्वामीजी महाराज ने बेतवेश्वरघाट पर संध्यादि करके 'बेतवेश्वर महादेव'' का राजोपचार से रूद्र महाभिषेक सम्पन्न करवाया।

9 दिसम्बर को मध्याह्न परम श्रद्धेय श्रीस्वामीजी महाराज झांसी में सिद्धेश्वर महादेव मंदिर पधारे जहाँ श्रीसिद्धेश्वर मंदिर के महंत श्रीहरिओमजी पाठक ने आपश्री का स्वागत-सत्कार किया। तत्पश्चात श्री सिद्धेश्वर महादेव का अभिषेक कर **'गोसेवा संकल्प सभा''** में पधारे। श्रीहरिओमजी पाठक ने परिसर की स्थापना एवं संचालन संबंधी व्यवस्थाओं की जानकारी से श्रीस्वामीजी महाराज को अवगत करवाया। उसके बाद ''गोसेवा संकल्प सभा'' को उद्बोधित करते हुए श्रीस्वामीजी महाराज ने कहा कि बुन्देलखण्ड के गौरवमयी गोसंस्कृति के इतिहास से कौन परिचित नहीं है। एक समय था जब

बुन्देलखण्ड समृद्ध क्षेत्रों में था। आज यहाँ गायों की स्थिति बहुत दयनीय है। बुन्देलखण्ड के लोगों में गाय के प्रति भक्ति आनुवांशिक है, वो आज सुषुप्त हो गई है, मात्र उसको जगाने की आवश्यकता है। महाराजजी ने कहा कि गाय की वर्तमान में दयनीय दशा का कारण आज के शासन की नीतियाँ हैं, क्योंकि आज की नीतियाँ वोटों की नीतियाँ हैं और गाय का वोट तो लगता नहीं है। इसलिये आप-हम सबको गोसेवा-गोरक्षा के लिये संकल्पित होना होगा। इसके लिये ''**गोसेवा संकल्प पत्र**'' भरवाने की व्यवस्था की गई है। झांसी बुन्देलखण्ड क्षेत्र की जिम्मेदारी श्री हरिओम पाठकजी ने स्वीकार की है। इस क्षेत्र में हमको कम-से-कम 50 हजार संकल्प पत्र भरवाने हैं, प्रत्येक व्यक्ति कम-से-कम 50 फोर्म तो भरवायें। उसके बाद महाराजजी पुनः ओरछा पधार गये।

10 दिसम्बर को श्रीस्वामीजी महाराज बरवुआसागर में एकादशी को ''गीता जयन्ती उत्सव'' में पधारे। वहाँ पर गोपूजन के पश्चात 54 विप्रों द्वारा गीताजी के 108 पाठ सम्पन्न हुए। इस अवसर पर हजारों की संख्या में क्षेत्र के साधु-संतों सहित भक्त-भाविकगण पहुँचे और श्रीस्वामीजी महाराज के आशीर्वचन से प्रेरित होकर गोसेवा और गोरक्षा का संकल्प लिया। इस अवसर पर श्रीस्वामीजी महाराज ने मनुष्य मात्र के लिये गो-गीता-गंगा की आवश्यकता एवं उनकी महत्ता पर प्रकाश डाला।

11 दिसम्बर को प्रातः श्रीस्वामीजी महाराज के सानिध्य में श्रीसुरभि गोशाला ओरछा में एक कुण्डीय सुरभि यज्ञ सम्पन्न हुआ एवं आपश्री के करकमलों से ''अखण्ड गोज्योति'' की स्थापना हुई। तत्पश्चात गोभण्डारा एवं श्रीस्वामीजी महाराज ने शास्त्रोक्त विधि से गोपूजन किया और इस अवसर पर श्रीद्वारिका प्रसाद मिश्र व श्रीकमलेशजी ने एक गोकुल संवर्धन शाला व गोचिकित्सालय खोलने का संकल्प लिया। सुरभि गोशाला से प्रस्थान कर 12 दिसम्बर प्रातः 5: 00 बजे कोटा के रास्ते होते हुए श्रीमनोरमा गोलोकतीर्थ, नन्दगांव पहुँचे।

''भारतीय गोसेवा संकल्प समिति'' की राष्ट्रीय कार्यकारिणी का अधिवेशन

भारतीय गोसेवा संकल्प समिति की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के अधिवेशन का शुभारम्भ होने से पहले देश से पधारे हुए गोभक्त कार्यकर्त्ताओं ने श्रीस्वामीजी महाराज के साथ श्रीमनोरमा गोलोकतीर्थ की परिक्रमा की एवं श्री धन्वंतरी गोचिकित्सालय में दर्शन एवं धर्माचार्य में गोपूजन किया। 10: 00 बजे 'अधिवेशन' का शुभारम्भ गोपूजन एवं संतों के करकमलों से दीपप्राकट्य के साथ हुआ। परम श्रद्धेय श्रीस्वामीजी महाराज के सान्निध्य में 'अधिवेशन' की अध्यक्षता श्री के.एन. गोविन्दाचार्यजी ने की। अध्यक्ष महोदय ने 'भारत गोदर्शन यात्रा' की रूपरेखा का प्रस्ताव रखा और उसकी निर्णायक बैठक इहलाबाद में रखना सुनिश्चित हुआ। इसकी तैयारियों की जिम्मेदारी श्री सुरेन्द्रसिंहजी बिष्ट द्वारा ली गई। पथमेड़ा महाराजजी का 12 जनवरी से 15 फरवरी 2017 तक इहलाबाद में गोज्योति रथ के साथ विराजमान रहने का विचार है और इस दौरान संतों की गोष्ठियों, गोभक्तों के सेमीनार पर भी विस्तार से विचार विमर्श होगा ऐसी संभावना है।

गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज के सानिध्य में श्रीदतात्रेय जयन्ती के भव्य आयोजन के साथ श्रीपथमेडा गोधाम में वार्षिक पाटोत्सव सम्पन्न।

13 दिसम्बर को श्री पथमेड़ा महाराजजी के सानिध्य में श्रीदतात्रेय जयन्ती के भव्य आयोजन के साथ वार्षिक पाटोत्सव सम्पन्न हुआ। प्रातः 6 बजे ही पं. पुखराज द्विवेदी एवं डा. ललित द्विवेदी के आचार्यत्व में राजोपचार एवं शास्त्रीय विधि से भगवान दत्तात्रेय का अभिषेक हुआ। दत्तात्रेय मंदिर में सामूहिक सहस्त्रनाम पाठ में सैंकडों संतों एवं गोसेवकों ने भाग लिया। महाराजजी के लम्बे अंतराल बाद पथमेड़ा आगमन से गोभक्तों में दर्शन, प्रवचन सुनने के प्रति विशेष उत्साह दिखा। उल्लेखनीय है कि श्री गिरिराजधरण मंदिर में पाटोत्सव यजमान श्री मेघराज

मोदी, गोरक्षक हनुमान मंदिर के श्री केशाराम सुथार, श्री राधाकृष्ण मंदिर के श्री प्रवीण कुमारजी पालडी, श्री गोधनेश्वर शिव मंदिर के यजमान श्री चुन्नीलालजी खेजड़याली सहित मुख्य यजमानों के परिवारों द्वारा मंत्रोचचार के साथ शास्त्रीय रीति से पं. ललितजी दिवे्द्धी के आचार्यत्व में धूमधाम से पाटोत्सव सम्पन्न हुआ। इसी प्रकार भगवान श्री दत्तात्रेय मंदिर में यजमान श्री कस्तुरजी जोशी द्वारा पाटोत्सव सम्पन्न हुआ।

बड़ी संख्या में गोसेवक संत उपस्थित

दत्तात्रेय जयंती महोत्सव के मंचीय कार्यक्रम में देशभर से बड़ी संख्या में गोसेवाभावी संत उपस्थित रहे। पूज्य श्री दिनेशगिरीजी महाराज, पूज्य श्री सीयावल्लभदासजी महाराज, पूज्य श्रीनारायणगिरी जी महाराज, पूज्य श्रीरघुवीरदासजी महाराज, जूना अखाड़ा थानापति, पूज्य श्री रविन्द्रानंदजी महाराज, पूज्य श्री दयाशंकरजी महाराज, पं.रामस्वरूपदासजी पांडेय, श्री पांथेवाड़ा महाराजजी, पूज्य श्रीरामचंद्रजी महाराज, पं श्रीपुखराजजी दिवेद्धी, श्रीसत्यनारायणजी महाराज, श्रीरामलल्लादासजी महाराज, श्रीधर्मानंदजी महाराज, संत श्रीचैनदासजी महाराज, संत श्रीसुमन सुलभ महाराज, संत श्रीगोविन्द वल्लभदास महाराज, संत श्रीनंददास महाराज, संत श्री अन्नतचैतन्य महाराज, संत श्री बलदेवदास महाराज, संत श्री गणेश महाराज आदि की उपस्थित रही। इस अवसर पर जिला प्रमुख श्री बन्नेसिंहजी गोहिल, विधायक श्री सुखरामजी विश्नोई, राव मोहनसिंहजी चितलवाना, दूरदर्शन दिल्ली के तकनीकी डायरेक्टर श्री ओमप्रकाश राजपुरोहित सहित अनेक गण्यमान्य जनों ने परम श्रद्धेय गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज से आशीर्वाद लिया।

गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज की उपस्थिति में विधिवत गोलासन नंदीशाला पुनः संभाली

गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज का हृद्रय व प्राण गोवंश की सेवा व रक्षा में ही बसते हैं, इसी कारण उन्हें गोसेवकों के आग्रह पर राष्ट्रीयस्तर की दो वर्षीय गोसेवार्थ-गोरक्षार्थ यात्रा मध्य में छोड़कर दूसरी बार सांचोर क्षेत्र में आना पड़ा। यहाँ विशेष ज्ञातव्य है कि कुछ समय से असामाजिक तत्वों द्वारा उपद्रव करने तथा प्रशासन द्वारा अतिक्रमण का नोटिस देने से आहत होकर ट्रस्टमंडल ने लगभग एक माह पूर्व विश्व विख्यात गोलासन नन्दीशाला का प्रबन्धन प्रशासन को सौंप दिया था। फलतः प्रशासन की विफलता से पिछले एक माह में नंदीशाला के चारा वितरण, सफाई, चिकित्सा, गोवंश वर्गीकरण सहित समस्त प्रबन्धन की व्यवस्थायें बिगड़ने से गोवंश को भूख एवं गंदगी से पीड़ित रहना पड़ा। चूंकि 4 दिसम्बर को राज्य सरकार एवं जालोर जिला प्रशासन के बारम्बार आग्रह पर श्री गोधाम पथमेड़ा एवं पूर्व गोलासन ट्रस्ट ने व्यवस्थाओं में पूर्ण सहयोग कर महीने भर से घोर दुःखी रहे हजारों गोवंश को राहत प्रदान की, परन्तु गोसेवकों-गोभक्तों का भाव था कि प्रशासन से विधिवत संपूर्ण व्यवस्थाओं को गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज के सानिध्य में ही ग्रहण करें। उल्लेखनीय है कि गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज को इसी विषय पर डेढ माह पूर्व वृंदावन से भारत गोदर्शन यात्रा के मध्य सांचोर आना पड़ा था।

हमारा किसी से कोई द्वेष नहीं, गोसेवक हमें सहज ही प्रिय हैं -गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानंदजी महाराज

मुख्य मंच से गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज ने सम्बोधित करते हुए कहा कि हमारा संबंध किसी संस्था या स्थान से नहीं होकर केवल गोसेवा-गोरक्षा के कार्य से है। गोलासन नंदीशाला के घटनाक्रम के संबंध में कहा कि शासन व प्रशासन की अपील पर नहीं अपितु गोवंश की असहनीय हो चुकी पीड़ा के कारण गोसेवकों ने व्यवस्था संभाली है। उन्होंने व्यथित भाव से कहा कि गोलासन नंदीशाला में गोवंश के कष्टों का कारण बने पक्षों को परमात्मा दंड अवश्य देंगे। कोई भी शासक दल और सत्ता गोविमुख होकर अधिक समय तक नहीं टिक सकती है।

गोऋषि स्वामीजी महाराज ने स्पष्ट किया कि हमारा किसी के साथ कोई द्वेष नहीं है। गोसेवक हमें सहज ही प्रिय हैं और जो गोसेवा के इस पवित्र कार्य में बाधक बनते हैं उनसे हमें पीड़ा होती है। उन्होंने कहा कि हमारा एक ही लक्ष्य है कि प्रत्येक व्यक्ति गोसेवा से जुड़े और गोवंश के विरोध का पाप न करे। उन्होंने भगवान दत्तात्रेय के कल्पगुरु होने पर प्रकाश डाला और गोसेवा को कत्याण का सर्वोत्तम मार्ग बताया।

श्रीपथमेड़ा गोधाम द्वारा स्थापित एवं संचालित विभिन्न गोसेवा संस्थाओं के ट्रस्टियों की संयुक्त बैठक को मार्गदर्शन प्रदान करते हुए गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानंदजी महाराज ने कहा कि गोवंश के कष्ट का कारण बनने वाले पक्षों को परमात्मा प्राकृतिक न्याय के अंर्तगत दंड देते हैं। पीड़ित मन से गोऋषि श्रीस्वामीजी ने कहा कि कोई भी शासक, दल अथवा सत्ता केंद्र गाय से विमुख होकर लम्बा नहीं चल सकता। उन्होंने गोभक्तों की सभा से अपील करते हुए कहा कि 'सभी का भला इसी में है कि एक-एक नागरिक अपने-अपने सांसद, विधायक, प्रधान, पंच-सरपंच के पास जाकर उन्हें लोकतान्त्रिक तरीकों से मजबूर करें कि वो गोसेवा-गोरक्षा के कार्य हेतु नीतियाँ बनावें और इसके लिये अपने बड़े कद के राजनैतिक आकाओं को मनावें।

श्रीस्वामीजी महाराज ने राज्य सरकार की रीति-नीति पर प्रश्न चिन्ह लगाते हुए कहा कि नेता, अधिकारी व सरकार बतावें कि लगभग 10 दिन बीत जाने के बाद भी अब तक सरकार ने 4 दिसम्बर को गोसेवकों से किया कौनसा वचन पूरा किया है? अभी तक नंदीशाला के स्थायी नियमन का सरकारी प्रयास कहीं नजर नहीं आ रहा है, न ही प्रदेश की गोशालाओं के गोवंश हेतु स्थायी अनुदान की घोषणा हुई है, न ही गोलासन में मृत गोवंश के लिए समाधि हेतु भूमि पर प्रशासन ने कोई निर्णय लिया है और न ही कुप्रबंधन से बिगाड़े हालातों के सुधार हेतु एकमुश्त सहयोग के वचन पर कुछ दिया है। उन्होंने राज्य सरकार के गोवंश पर अनदेखीपूर्ण, असंवेदनशील एवं उपेक्षित रूख को निराशाजनक बताते हुए कहा कि लगता है कि 'प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से कहीं-न-कहीं सरकार गोघाती तत्वों के दबाव में है या फिर सरकार के कुछ तत्व गोघातियों से अवश्य ही मिले हुए हैं। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार शीघ्रातिशीघ्र अपने "विजन डोक्यूमेंट" की घोषणाओं तथा समय-समय पर गोसेवकों से किए गये सभी वादों को पूरा करें।

गोऋषि स्वामीजी महाराज ने उपस्थित हजारों गोभक्तों से कहा कि कुछ माह पूर्व देश के प्रधानमंत्री के गोसेवा विरोधी बयान से देश की गोसेवी संस्थाओं को गोसेवा में मिल रहे जन सहयोग को भारी आघात पहुँचा। अब तो 8 नवम्बर को मुद्रा बंदी के बाद कोई चाहकर भी गोग्रास सहयोग देने में असमर्थ सा हो गया है, क्योंकि किसी के पास मुद्रा ही नहीं है। इस प्रकार से सरकार ने दान पर वैधानिक बाधाएँ खड़ी कर दी है फलतः गोसेवा के लिए वर्तमान दौर अत्यन्त कठिन हो गया है। साथ ही उपस्थित जन समुदाय से कहा कि 'धर्म, अध्यात्म, प्रकृति व परमात्मा को मानने वाले आस्तिक गोसेवकों को किसी व्यक्ति, पक्ष, क्षेत्र अथवा पार्टी-दलादि के प्रभाव में आकर अपनी गोसेवा-गोरक्षा के प्रति निष्ठा व संकल्प से समझोता नहीं करना चाहिये। उन्होंने कहा कि गोरक्षा हम सबके पूर्वजों के संस्कार, त्याग व बलिदानों की महान परम्परा रही है और इस मानव कल्याणकारी पथ से किसी भी कीमत पर विचलित नहीं होना चाहिये। स्वामीजी महाराज ने गोभक्तों से आह्वान किया कि चाहे लाख संकट आये परन्तु गोसेवा के कार्य को कोई भी बुरी ताकत रोक नहीं सकेगी तथा एक दिन संपूर्ण गोरक्षा की स्थापना अवश्य ही होकर रहेगी।

भगवान ब्रह्मा-विष्णु-महेश तीनों का एक स्वरूप कल्पगुरु श्रीदत्तात्रेय

– गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज

महाराजजी ने भगवान दत्तात्रेय के कल्पगुरु होने पर प्रकाश डालते हुए कहा कि 'पूरे संसार को मार्ग दिखाने वाले दत्तात्रेय भगवान ही हैं। वे कल्पगुरु और भगवान दोनों हैं तथा विष्णु के छठे अवतार हैं। दत्तात्रेय संसार के पालनकर्ता विष्णु अवतार के साथ-साथ सृष्टि के रचियता बह्मा तथा संहारकर्ता भगवान महादेव भी हैं। उन्होंने कहा कि भगवान श्रीकृष्ण ने कल्पगुरु दत्तात्रेय से ही ज्ञानोपदेश लिया था, आदि शंकराचार्य ने भी काशी में दत्तात्रेय भगवान से ही ज्ञान की प्राप्ति की थी और नाथ संप्रदाय के प्रणेता श्रीगोरखनाथजी ने भी गिरनार पर्वत पर दत्तात्रेय से ज्ञान प्राप्त किया था। गोऋषि स्वामीजी महाराज ने कहा कि दत्तात्रेय अवधूत अवस्था में रहते हैं तथा वे किसी को भी किसी भी रूप में मिल सकते हैं। उनका अपना कोई रूप नहीं है और विविध रूपों में विचरण करते रहते हैं और उनका दिव्य स्वरूप इन भौतिक आँखों से देखना संभव नहीं है। दत्तात्रेय भगवान अत्यन्त दयालु हैं और अपने भक्तों द्वारा भक्ति भाव से पुकारने मात्र से सभी कष्ट दूर कर देते हैं।

श्री पथमेड़ा स्वामीजी महाराज के सानिध्य में 14 दिसम्बर को गोलासन नंदीशाला परिसर में कार्यकर्ताओं की बैठक आयोजित

गोऋषि स्वामीजी महाराज के सानिध्य में 14 दिसम्बर को प्रातः 10 बजे से गोलासन नन्दीशाला में विद्यमान लगभग 14 हजार नंदियों की सेवा-सुश्रुषा के हालातों का निरीक्षण व अवलोकन हेतु गोसेवकों को मार्गदर्शन देते हुए बैठक में आशीर्वचन दिया। गोलासन नंदीशाला की व्यवस्थाओं की पुनःस्थापना व सुधारों को लेकर हो रहे कार्यो पर गोलासन ट्रस्ट सहित श्रीपथमेड़ा गोधाम द्वारा स्थापित एवं संचालित विभिन्न गोसेवा संस्थाओं के ट्रस्टियों की संयुक्त बैठक में गोभक्तों को मार्गदर्शन प्रदान किया।

14 दिसम्बर को गोलासन नंदीशाला की बैठक के पश्चात् महाराजश्री दोपहर 4 बजे गुजरात सीमा में प्रवेश कर सुईगांव में आयोजित ''गोसेवा संकल्प सभा'' में आशीर्वाद प्रदान करने पधारे जहाँ हजारों की संख्या में गोभक्त श्रद्धालु महाराजश्री का कई घण्टों से इन्तजार कर रहे थे। गोभक्तों ने गोमाता का संकीर्तन करके आपश्री का भव्य स्वागत किया। महाराजजी ने गुजरात के कर्मठ गोभक्त कार्यकर्त्ताओं को आशीर्वाद देते हुए कहा कि आप जिस उत्साह के साथ गोसेवा-गोरक्षा में रात दिन लगे हुए हो, इससे लोक व परलोक दोनों जगहों पर आपका परम कल्याण है। वहाँ से महाराजजी द्वारा श्रीजलाराम हरिधाम गोशाला भाभर के दर्शन एवं अवलोकन पश्चात श्रीराजाराम गोशाला, टेटोड़ा में रात्रि विश्राम किया। 15 दिसम्बर को पूज्यश्री द्वारा श्रीराजाराम गोशाला में आयोजित श्रीमद्‌भागवत कथा ज्ञानयज्ञ एवं नवनिर्मित श्रीवृन्दावन गोधाम का शुभारम्भ किया। महाराजजी 16 दिसम्बर को ''श्रीराजाराम गोशाला' टेंटोड़ा में गोदर्शन, गोशाला परिक्रमा एवं गोपूजन कर वाया उदयपुर होते हुए पुनः ''श्री रामराजा सरकार'' कनक भवन, ओरछा पधारे तथा पुनः**'भारत गोदर्शन यात्रा'** में सम्मिलित हो गये।

17 दिसम्बर को भारत गोदर्शन यात्रा पुनः श्रीसुरभि गोशाला, ओरछा में गोपूजन एवं श्रीरामराजा सरकार के दर्शन कर लोदरा में प्रसिद्ध लक्ष्मणजी के मंदिर पहुँची, वहाँ हजारों की संख्या में गोभक्त श्रद्धालुओं ने श्रीमहाराजजी का स्वागत किया और श्रीहनुमानजी के मंदिर से लेकर पूरे शहर से होते हुए विशाल शोभायात्रा के साथ **''अखण्ड गोज्योति रथ''** श्रीलक्ष्मणजी के मंदिर पहुंचा जहाँ सभी श्रद्धालुओं ने 'गोज्योति'' का पूजन एवं दर्शन किया। तत्पश्चात श्रीस्वामीजी महाराज ने आयोजित 'गोसेवा संकल्प सभा' में हजारों की संख्या में उपस्थित गोभक्त सज्जनों को आशीर्वचन प्रदान किये और सभी को गोसेवा के संकल्प हेतु **''गोसेवा संकल्प पत्र''** भरने का आह्वान किया। लोदरा से प्रस्थान कर श्रीस्वामीजी महाराज टीकमगढ़ में द्वारिका

प्रसादजी मिश्र द्वारा संचालित गोशाला के दर्शन करते हुए प्रसिद्ध स्वयंभू श्रीपतालेश्वर महादेव के दर्शनार्थ पधारे एवं वहाँ महारूद्राभिषेक का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। फिर पुनः टीकमगढ़ में आयोजित 'गोसेवा संकल्प सभा' में पधारे। जहाँ सैंकड़ों की संख्या में भक्तों ने अखण्ड गोज्योति का दर्शन एवं पूजनकर श्रीस्वामीजी महाराज से आशीर्वाद प्राप्त किया। महाराजजी ने सभी से गोसेवा में लगने का आह्वान किया और टीकमगढ़ में 'गोसेवा संकल्प पत्र'' भरवाने की जिम्मेदारी श्रीद्वारिका प्रसादजी मिश्र को सौंपी।

वहाँ से प्रस्थान कर अखण्ड गोज्योति श्रीमदनमोहनदासजी महाराज के ध्जरेही टेगेला पहुँची। वहाँ उपस्थित सभी गोभक्तों ने ''अखण्ड गोज्योति'' का दर्शन एवं पूजन किया। श्रीस्वामीजी महाराज ने श्रीहनुमानजी महाराज के दर्शन कर आयोजित 'गोसेवा संकल्प सभा' में पधारे हुए गोभक्त श्रद्धालुओं को आशीर्वचन प्रदान किये। महाराजजी ने धेनु, धरती, प्रकृति, पर्यावरण एवं संस्कृति की रक्षार्थ भक्तों को संकल्पित होने का आह्वान किया और वहाँ श्री सीतारामदासजी महाराज को 'गोसेवा संकल्प पत्र' भरवाने की जिम्मेदारी सौंपी।

वहाँ से प्रस्थान कर 'गोज्योति'' श्रीबलदेवगढ़ में श्रीद्वारिकाप्रसादजी के पेट्रोल पम्प पर पहुँची जहाँ सैंकड़ों की संख्या में श्रद्धालु काफी समय से प्रतीक्षा कर रहे थे और सभी ने गोमय संकीर्तन करते हुए 'ज्योति' के दर्शन, पूजन, परिक्रमा की। श्रद्धेय स्वामीजी महाराज ने पधारे हुए सभी गोभक्तों को गो महिमा, गाय की उपादेयता एवं आवश्यकता पर मार्गदर्शन एवं आशीर्वचन प्रदान कर रात्रि विश्राम के लिये छत्रपुर प्रस्थान किया। वेदेही वल्लभ कुंज, छत्रपुर श्रीराजेशजी गंगेली के वहाँ पहुँचे। वहाँ भक्तों ने गोज्योति का पूजन-दर्शन किया।

18 दिसम्बर को प्रातः छत्रपुर के अनेक गोभक्त वल्लभकुंज श्रीस्वामीजी महाराज के दर्शनार्थ पधारे। तत्पश्चात श्रीस्वामीजी महाराज वहाँ गंगेली जी के गोष्ठ में गोमाता के दर्शन कर श्रीहरिओम गोशाला गोचिकित्सालय पधारे जहाँ महाराजजी ने बीमार गोवंश के दर्शन किये और बीमार गोवंश की सेवा के लिये मार्गदर्शन प्रदान किया। 11:00 बजे छत्रपुर में आयोजित 'गोसेवा संकल्प सभा'' में गोज्योति के साथ श्रीमहाराजजी पधारे जहाँ पर गोज्योति के पूजन उपरान्त महाराजजी ने उपस्थित गोभक्त श्रद्धालुओं व सज्जनों को गोसेवा के लिये प्रेरित किया और कहा कि वर्तमान में गो की रक्षा बहुत जरूरी है। गो की रक्षा से ही धेनु, धरती, प्रकृति, पर्यावरण एवं संस्कृति की रक्षा सम्भव है इसलिये हम सब को संकल्पित होकर गोसेवा-गोरक्षा करनी होगी। जिसके लिये महाराजजी ने 'गोसेवा संकल्प पत्र'' भरने का आह्वान किया। तत्पश्चात् वहाँ से प्रस्थानकर 'अखण्ड गोज्योति' भारत गोदर्शन यात्रा चित्रकूट आरोग्य धाम पहुँची।

19 दिसम्बर को महाराजजी रामघाट पर मंदाकिनी का पूजन एवं आचमन कर, गोसेवा-गोरक्षा के सर्वकल्याणकारी संकल्प के साथ 'भगवान मत्यगयेन्द्रजी का रूद्राभिषेक सम्पन्न करवाया। तत्पश्चात आपश्री ने सभी परिकरों के साथ 'श्री कामतानाथ'' की परिक्रमा की।

20 दिसम्बर को श्रीस्वामीजी महाराज पंच प्रयाग (झुरी व मंदाकिनी नदियों के संगम) एवं सती अनसुयाजी के दर्शनार्थ पधारे और सायंकाल में आपकी पूज्य श्रीमदनगोपालजी महाराज, पूज्य स्वामी श्रीकृष्णानन्दजी महाराज के साथ गोविषयक सत्चर्चा हुई और 24 दिसम्बर को चित्रकूट के संतों की गोष्ठी का निर्धारण हुआ।

21 दिसम्बर को श्रीस्वामीजी महाराज ने निर्मोही अखाड़ा, प्रेमपुजारी रामाश्रय गोशाला के दर्शन कर गोसेवा सम्बन्धित मार्गदर्शन प्रदान किया। तत्पश्चात चमत्कारिक श्रीहनुमान धारा व सीता रसोई के दर्शन किये। अज्ञातवास में श्री महाराजजी यहाँ 3

महीने विराजे थे। उसके बाद शिवमंदिर पधारे जहाँ पर सत्संग का आयोजन हुआ। फिर पुनः आरोग्य धाम आ गये।

22 दिसम्बर को श्रीस्वामीजी महाराज गोस्वामी श्रीतुलसीदासजी द्वारा सेवित 'श्रीअनादि हनुमान' मंदिर दर्शनार्थ पधारे।

24 दिसम्बर को श्रीपथमेड़ा महाराज की प्रेरणा से एवं महंत श्रीमदनगोपालजी महाराज, पू. स्वामी श्रीकृष्णानन्दजी महाराज के प्रयासों से चित्रकूट में श्रीकामतानाथ के मुख्य द्वार पर भारतीय गोसेवा संकल्प समिति के बैनर तले संतों की 'गोसेवा संकल्प संगोष्ठी'' का आयोजन हुआ। जिसमें पू.महंत श्रीरामजीदासजी महाराज, महंत श्रीसीताशरणजी महाराज, पू. श्रीरामप्रवेशदासजी महाराज, महंत श्रीओंकारदासजी महाराज, आचार्य शशिभूषणदासजी महाराज, महंत श्रीमदनदासजी सहित अनेक संतों ने भाग लिया। संगोष्ठी में चित्रकूट में गो-अभ्यारण्य की मांग का मुख्यमंत्री के नाम एक ज्ञापन तैयार कर तहसीलदार को सुर्पुद किया गया और मंदाकिनीजी में गंदगी की सफाई के लिये फिल्टर प्लांट की भी चर्चा की गई। इस अवसर पर सभी संतों ने गोसेवा-गोरक्षा के लिये संकल्प लिया। इस क्षेत्र में श्रीमदनगोपालजी महाराज ने गोसेवा संकल्प की जिम्मेदारी स्वीकार की।

25 दिसम्बर को श्रद्धेय श्रीस्वामीजी महाराज द्वारा सुतीक्षणा, सरभंग आदि पवित्र तीर्थो के दर्शन करते हुए महाभारतकालिन अघपर्षण कुण्ड के दर्शन किये, जहाँ साक्षात् धर्म ने यक्ष रूप में पाण्डवों से प्रश्नोत्तर किये और धर्मराज युधिष्ठिर ने यक्ष के प्रश्नों का उत्तर देकर सभी पाण्डवों का जीवन प्राप्त किया। श्रीस्वामीजी महाराज ने धेनु, धरती, प्रकृति, पर्यावरण एवं संस्कृति के संरक्षण, सम्पोषण, संवर्धन, संशोधन तथा समाराधन के सर्वकल्याणकारी सकल्पों के सिद्धिर्थ पवित्र कुण्ड के जल में आचमन करके प्रार्थना की। 26 दिसम्बर को महाराजजी टाटी घाट के दर्शनार्थ पधारे।

श्रीस्वामीजी महाराज 28 दिसम्बर को दिल्ली में विश्राम कर अगले दिन महाराष्ट्र के गोभक्त कार्यकर्त्ताओं द्वारा आयोजित 'रस महोत्सव' में आनन्दी पधारेंगे।

गोलासन नंदीशाला ट्रस्ट मण्डल की वृहद बैठक सम्पन्न :-

18 दिसम्बर रविवार को पूज्य श्री नन्ददासजी महाराज, पूज्य श्रीगोविन्दवल्लभदासजी महाराज, पूज्य श्रीदेवेश चेतन्यजी महाराज, पूज्य श्रीअनन्त चेतन्यजी महाराज, पूज्य श्रीनेमीनाथजी महाराज आदि संतों के सानिध्य में विश्व की सबसे बडी नंदीशाला 'श्री महावीर हनुमान पर्यावरण व गोसंवर्धन गोसेवाश्रम गोलासन' ट्रस्ट मण्डल की वृहद बैठक राव श्री मोहनसिंहजी चितलवाना की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में सांचोर क्षेत्र के सभी व्यापारिक, शैक्षिक, चिकित्सा, सामाजिक, सांस्कृतिक प्रतिष्ठानों एवं संगठनों के प्रमुखों, राजनैतिक दलों के गण्यमान्य प्रतिनिधियों एवं विभिन्न विभागों के अधिकारीगणों ने भाग लिया। इस दौरान सैंकड़ों गोसेवकों द्वारा संतों की उपस्थिति में तन-मन-धन से इस नंदीशाला की व्यवस्थाओं में सहयोग का संकल्प व्यक्त किया गया। नंदीशाला के अध्यक्ष श्री रावजी ने क्षेत्र के प्रत्येक व्यक्ति से नंदीशाला को अपना मानकर सहयोग की अपील की। सांचोर विधायक श्री सुखरामजी विश्नोई ने कहा कि गाय सबकी तारणहार है तथा समस्त सेवा कार्यो में गोसेवा सर्वश्रेष्ठ है। उन्होंने कमाई का दशांश गोसेवा में लगाने की सबसे अपील की। इस अवसर पर सभी उपस्थित जनों ने बढ-चढकर नंदीसाला में गोग्रास के लिए सहयोग की घोषणायें की।

मासिक पत्रिका ''कामधेनु-कल्याण'' ''श्री गोपाल गोवर्धन गोशाला'' के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक पूनम राजपुरोहित ''मानवताधर्मी'' द्वारा सुभद्रा प्रिंटिंग प्रेस, विश्नोई धर्मशाला के पास, साँचोर (जालोर) से मुद्रित करवाकर ''श्री गोपाल गोवर्धन गोशाला'' पथमेड़ा, पोस्ट-हाड़ेतर, तहसील-सांचोर, जिला-जालोर (राजस्थान) से प्रकाशित।

सहयोग के प्रकार

1. एक गोमाता की सेवा प्रतिमाह	1,500/- रू.
2. एक गोमाता की सेवा प्रतिवर्ष	18,000/- रू.
3. हरा घास-चारा की एक गाड़ी	31,000/- रू.
4. सूखे घास की एक गाड़ी	71,000/- रू.
5. अक्षय भू-दान देकर प्रति एक बीघा	1,01,000/- रू.
6. बीमार गोवंश की दवाईयाँ प्रतिमाह	5,50,000/- रू.
7. पौष्टिक आहार की एक गाड़ी	2,50,000/- रू.
8. गुड़ की एक गाड़ी	3,00,000/- रू.
9. एक दिन का घास चारा हरा एवं सूखा (40 गाड़ी)	20,00,100/- रू.

10. तालाब, ट्यूबेल, गोगृह, ग्वाल गृह, गो चारा संग्रालय आदि में भी आप सहयोग कर सकते हैं।

11. अपने परिवार में जन्मादि उत्सव, व्रत-उपवास के दिन की बचत, प्रतिष्ठान की आय में से सामर्थ्यानुसार सहयोग करें।

आप सहयोग " श्री गोपाल गोवर्धन गोशाला, पथमेड़ा"के नाम से ऑनलाईन खाता संख्या द्वारा

Bank Of Baroda A/c No:- 29450100007739 IFSC Code BARB0SANCHO
SBBJ A/c No:- 51055523971 IFSC Code SBBJ0011237
SBI A/c No:- 31187795707 IFSC Code SBIN0011308

शाखा सांचौर में भेज सकते है। PAN NO: AAATGO739J

आयकर आयुक्त II जोधपुर के आदेश क्रमांक आ.आ.- II /जी./2010-11/1480 दिनांक 16-9-2010 के द्वारा गोपाल गोवर्धन गोशाला, पथमेड़ा, जालोर पेन न. AAATG0739J को देय दान आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80ळ के अन्तर्गत छूट योग्य।

कार्यालय एवं कार्यकर्त्ताओं के सम्पर्क सूत्र

मुख्यालय श्रीपथमेड़ा गोधाम -7665544456, 7665544002, 9414152168,
प्रकाशन विभाग - 7665000980,8696866666 लेखा विभाग- 02979-287102, 8003392300,
नन्दीशाला गोलासन परिसर- 7665000775, 7665000778
श्री मनोरमा गोलोकतीर्थ नन्दगांव परिसर- 8003193101, 7742093200
कामधेनु आवासीय विद्यालय, नन्दगांव- 7665000660, 7073000108
आकास्मिक सेवा विभाग (एम्बुलेंस)- 7665620111,
चिकित्सा परामर्श विभाग- 7665000906, चारा खरीद विभाग- 8003193101, 9414152163

अधिकाधिक गोभक्त मासिक ''कामधेनु-कल्याण'' के 10 वर्षीय आजीवन सदस्य बने। सदस्यता राशि 1100 रूपये का ड्राफ्ट ''कामधेनु प्रकाशन समिति'' के नाम से सम्पादकीय पते पर अथवा बी.ओ.बी शाखा सांचोर में ऑनलाईन खाता संख्या 29450100000326 में भेंजे।

Email:g.pathmeda@gmail.com web:www.pathmedagodham.org

RNI NO.RAJHIN/06/17167 POST REGD NO.RJ/SRO/9638/2015-2017
Posting At Sanchore 343041, Published 26th Of each month&Posted on 1st to 3th of each month price 1 copy Rs.10, Issue: january, 2017

लोक प्रसिद्ध गोसेवा संस्थान लाखों गोवंश की सेवा में समर्पित

''श्री पथमेड़ा गोधाम महातीर्थ'' की प्रेरणा से ....

धेनु, धरती, प्रकृति, पर्यावरण एवं संस्कृति की सेवा में समर्पित

भारत गो दर्शन यात्रा 2017-18

परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज ''माघ मेला'' प्रयागराज (इलाहाबाद) में माघ मास कृष्णपक्ष प्रतिपदा 12 जनवरी से माघ मास शुक्लपक्ष पूर्णिमा 15 फरवरी, 2017 तक विराजमान रहेगें। इस दौरान गोवैज्ञानिकों की संगोष्ठियाँ, संत-धर्माचार्यों की धर्मसभा, गोपालक किसानों की गोपालन सभा, गोभक्तजनों की गोसेवा संकल्प सभाओं का आयोजन होगा, जिसमें आप सभी गोभक्त सहृदय आमन्त्रित है... जय गोमाता, जय गोपाल।

भारतीय गोसेवा संकल्प समिति

Contact: Flat No-1492, sec-1, Vasant kunj, New Delhi-110070
8108176743, 7073000150